www.thearyasamaj.org

Annual Subscription Rs. 100/- ओ३म् 12th August 2013

# आर्य जीवन

# ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प
హింది-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

दिनांक १०-११ अगस्त २०१३ शनिवार-रविवार को सम्पन्न
आर्य प्रतिनिधि सभा आंध्र प्रदेश के साधारण अधिवेशन में सर्व सम्मति से

## प्रो. विट्ठलराव आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा आंध्र प्रदेश के पुनः प्रधान निर्वाचित

श्री हरिकिशनजी वेदालंकार मंत्री तथा श्री अशोककुमार श्रीवास्तवजी कोषाध्यक्ष निर्वाचित श्री डॉ. टी.वी. नारायणजी , श्री लक्ष्मणसिंहजी , डॉ. श्रीमती वसुधा शास्त्रीजी, श्री के. सूर्यप्रकाशजी व श्री वेंकट रेड्डीजी (बोधन)-सर्वसम्मति से उप प्रधान निर्वाचित तथा श्री आर. रामचंद्र कुमारजी, श्री पी. जगन मोहनजी, श्री डॉ. सी.एच. चंद्रय्याजी, श्रीमती डॉ. सुलोचनाजी व श्री पी. सत्यनारायणजी उपमंत्री निर्वाचित ।

निर्वाचन की घोषणा करने के बाद चुनाव अधिकारी मा. श्री आर. एस. तोमरजी प्रधान श्री विट्ठलराव जी आर्य का सम्मान करते हुए

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

# आर्य जीवन

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

ఆర్య జీవన్

హింది-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश
हैदराबाद का मुख पत्र

वर्ष : २२ अंक : १५
दयानन्दाब्द : १८९
सृष्टि संवत् : १९७२९४९११३
वि.सं. : २०७०
नंदन नाम संवत् श्रावण शुक्ल पक्ष
१२-०८-२०१३

सम्पादक
विठ्ठलराव आर्य
वार्षिक मूल्य रू. 100

कार्यालय
आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश
महर्षि दयानन्द मार्ग, सुल्तान बाजार, हैदराबाद

दूरभाषः 040-24753827, 66758707, 24750363
फ्याक्सः 040-24557946, 24756983

**Email :**
aaryajeevan_aaryajivan@yahoo.co.in.
arpratinidhisabha@yahoo.co.in.
acharyavithal@gmail.com,
aryavithal@yahoo.co.in.

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR

*Editor*: Vithal Rao Arya
Annual subscription: **Rs.100/-**

*प्रत्येक मनुष्य को पुरूपार्थ पर ध्यान देना चाहिए। इसी के द्वारा क्रियामाण, संचित और प्रारब्ध कर्म की स्थिति सुधरती है। इसी से मनुष्य उत्तम स्थिति को प्राप्त हो कर उन्नति के पात्र वनते है।*

# तेलंगाना - पिछले साठ वर्षों के संघर्ष का परिणाम

तेलंगाना पिछले साठ वर्षों से अन्याय के खिलाफ संघर्ष का परिणाम है। पार्टियों के लिए, विशेषकर कांग्रेस पार्टी के लिए तेलंगाना वोट का मुद्दा रहा व है। पर तेलंगाना प्रांत निज़ाम से मुक्त होने के बाद ३१ अक्तूबर १९५६ तक एक स्वतंत्र राज्य का हिस्सा रहा है। भाषा के नाम पर सीमांध्र प्रदेश के तेलुगु भापी प्रांत के साथ सशर्त विलीनता हुई थी, लेकिन जैसे अंग्रेज़ों ने भारत को एक कॉलोनी वनाकर लगातार शोषण किया, उसी तरह सीमांध्र प्रांत के राजनातिक नेता और व्यापारी पिछले साठ वर्प से सभी प्रकार की शर्तों को, नियमों को, समझौता सूत्रों को दरकिनार कर तेलंगाना प्रांत का शोषण करते रहे। तेलंगाना की लड़ाई शोषण के खिलाफ, सभी क्षेत्रों में अन्याय के खिलाफ न्याय की लड़ाई रही है। एक दिन- दो दिन नहीं, यह पूरे पिछले साठ साल का संघर्ष है और १९६९ में संघर्ष के दौरान ३६९ नौजवान लड़के मारे गये। इसी तरह पिछले साढ़े तीन साल के आंदोलन में हज़ार से ऊपर नौजवान युवकों ने आत्माहुति दी। इस आंदोलन में समाज के सभी वर्ग छोटे-वड़े,दलित,महिला, अल्पसंख्यक आदि ने भाग लिया। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रस्ताव के अनुसार प्रतिनिधि सभा ने तथा आर्य समाजों ने व सभा प्रधान विठ्ठलराव आर्यजी ने वी इस आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। इस आंदोलन को इतने ऊँचे स्तर तक ले जाने में तेलंगाना राष्ट्र समिति पार्टी एवं उसके अध्यक्ष श्री के. चंद्रशेखर रावजी का ऐतिहासिक एवं महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस सभी का परिणाम ही कांग्रेस की कार्य समिति को तेलंगाना राज्य वनाने के पक्ष में फैसला लेने के लिए मजवूर किया है। चाहे इसके पीछे उनकी राजनीति ही क्यों न हो, मगर फैसला न लेते, तो कांग्रेस का सफाया भी होना था। तेलंगाना राज्य की प्रक्रिया शहीदों को समर्पित है। **-विठ्ठलराव आर्य**

# तेलंगाना : वोट ही ब्रह्म है, बाकी सब मिथ्या

तेलंगाना की घोषणा करके कॉंग्रेस ने अपना पिंड ज़रूर छुड़ा लिया, लेकिन उसने यह भी सिद्ध कर दिया कि उसकी सोच राष्ट्रीय नहीं है, दूरगामी नहीं है और तर्कपूर्ण नहीं है। यदि कॉंग्रेस एक अखिल भारतीय पार्टी की तरह सोचती, तो क्या वह सिर्फ तेलंगाना की घोषणा करती? वह देश के सवी प्रांतों के वारे में सोचती और किसी व्यापक राज्य पुनर्गठन आयोग की घोषणा करती, जो विदर्भ, गोरखालैंड, बोदोलैंड, हरित प्रदेश, बुंदेल खंड, मालवा आदि नये प्रांतों के निर्माण पर विचार करता। अव तेलंगाना की वजह से जो आग अन्य प्रांतों में फैल रही है, अगर उसने लौ पकड़ ली, तो कॉंग्रेस को लेने के देने पड़ जाएँगे। तेलंगाना के वोट तो उसे ज़रूर मिलेंगे, लेकिन देश के दर्जनों क्षेत्र उसके विरुद्ध खांडा लेकर खड़े हो जाएँगे। अव तेलंगाना और सन २००० में झारखंड, उत्तराखंड और छत्तीसगढ़ के निर्माण ने यह सिद्ध कर दिया है कि सिर्फ भाषाई आधार पर ही प्रांतों का निर्माण अब अप्रासंगिक हो गया है। यदि भाषा के आधार पर ही प्रांतों का निर्माण होना है, तो सारे उत्तर भारत को ही एक प्रांत घोपित क्यों न किर दिया जाए? पंजाव के अलावा सर्वत्र हिंदी ही बोली जाती है। अकेले उत्तर प्रदेश के पाँच टुकड़े करने की माँग क्यों ज़ोर पकड़ रही है? अब भाषा के अलावा तो नये आधार उठ खड़े हुए हैं, आर्थिक, भौतिक, सामाजिक उन्हें करना और उनके अनुसार नये राज्य वनाना ज़रूरी है।भारत जैसे विविधता पूर्ण विसाल देश के लिए २९ या ३० राज्य काफीनहीं है। अमेरिका की आवादी भारत की तुलना में एक चौताई ही है, लेकिन वहाँ ५० राज्य हैं। भारत के हर राज्य में औसतन साढ़े तीन करोड़ लोग रहते हैं, जवकि अमेरिका में सिर्फ ६० लाख और व्राज़िल में ७० लाख लोग रहते हैं। यदि प्रांत छोटे हों और उनमें लोग कम हों, तो शासन वेहतर ढंग से चल सकता है। राज्यसभा या सिनेट में भी उनके प्रतिनिधियों की संख्या लगभग वरावर-वरावर रह सकती है। यदि कॉंग्रेस में दूरदृष्टि होती, वह राज्यों के साथ राज्यसभा के पुनर्गठन की वात भी सोचती। यह पुनर्गठन नागरिकों की आज़ादी वढ़ाता और आंतरिक उपनिवेशवाद को भी समाप्त करता। राज्यों की संख्या बढ़ने से केंद्र कमज़ोर नहीं होता, वल्कि उसकी ताकद वढ़ती। भारत का संघात्म रूप प्रखर होता, लेकिन इन सव वुनियादी वातों की परवाह किसे है? अव तो वस वोट ही व्रह्म है, वाकी सव मिथ्या है।

**- डॉ. वेदप्रताप वैदिक**

**Date: 12-08-2013**

www.thearyasamaj.org

# विट्ठलराव आर्य

## पुनः आर्य प्रतिनिधि सभा आंध्र प्रदेश के अध्यक्ष निर्वाचित

### श्री हरिकिशनजी वेदालंकार मंत्री व श्री अशोक कुमार श्रीवास्तवजी कोषाध्यक्ष निर्वाचित

आर्य प्रतिनिधि सभा आंध्र प्रदेश की साधारण सभा का अधिवेशन हैदरावाद के राजमोहल्ला स्थित पं. नरेंद्र भवन में १० व ११ अगस्त

२०१३ शनि दिन सम्पन्न हुआ। के अधिवेशन में के लिए आर्य आंध्र प्रदेश का सम्पन्न हुआ। प्रांतों से भारी प्रतिनिधियों ने चुनाव को सम्पन्न सार्वदेशिक आर्य के न्याय विभाग दिल्ली के

और रविवार के साधारण सभा अगले तीन वर्ष प्रतिनिधि सभा चुनाव भी राज्य के सभी संख्या में भाग लिया। करने के लिए प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष व सुप्रसिद्ध

अधिवक्ता श्री आर. एस. तोमरजी चुनाव अधिकारी के रूप में पधारे हुए थे। चुनाव अधिकारी द्वारा सम्पन्न किये गये चुनाव में श्री विट्ठलराव आर्यजी अगले तीन वर्षों के लिए सर्व सम्मति से प्रधान निर्वाचित कर लिये गये। इसी प्रकार सर्वसम्मति से श्री हरिकिशनजी वेदालंकार को मंत्री के रूप में व श्री अशोक श्रीवास्तवजी को कोषाध्यक्ष के रूप में निर्वाचित कर लिया गया। श्री मधुर प्रकाशजी दिल्ली, श्री धर्मपालजी शास्त्री, दिल्ली, सार्वदेशिक सभा की ओर से निरीक्षक थे तथा एन. कृष्णमूर्ति जी ने सहायक चुनाव अधिकारी के रूप में कार्य किया।

**सीमा पर पाकिस्तान की नापाक हरकतों के खिलाफ सर्व सम्मति से प्रस्ताव**

**प्रस्ताव के माध्यम से कठोर कार्यवाही की माँग**

**इसी प्रकारमहिलाओं पर हो रहे अत्याचारों को रोकने के लिए**

**विशेष न्यायालयों के गठन की व दोषियों को कठोर दंड देने की माँग।**

**तेलंगाना के सिलसिले ममुख्यमंत्री श्री किरणकुमार रेड्डीजी का रवैया मुख्यमंत्री के रूप में न रहकर एक गुट के रवैये जैसा बन गया है अतः उनसे तत्काल मुख्यमंत्री पद से त्याग-पत्र की माँग की गई।**

इस अधिवेशन में पाकिस्तान की नापाक हरकतों का खंडन करते हुए पाकिस्तान की हरकतों के खिलाफ कठोर कदम उठाने की माँग भारत सरकार से की गई। इसी प्रकार महिलाओं पर लगातार हो रहे बलात्कारों के प्रति तीव्र संवेदना व्यक्त करते हुए विशेष

कोर्ट का आयोजन कर दंड दिये जाने की माँग सिलसिले में कांग्रेस )के निर्णय के बाद किरण कुमार रेड्डी का न रहकर एक गुट के उनसे तत्काल मुख्यमंत्री की गई। बड़े प्रधान सभा ने घोषणा बसे हुए लोगों को पूरी भी अन्य प्रांतों से आये तेलंगाना का समर्थन अधिवेशन समाप्त

दोषियों को कठोर से कठोर की गई। तेलंगाना के कार्य समिति (सीडब्ल्यूसी आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री रवैया मुख्यमंत्री के रूप में रवैये जैसा बन गया है अतः पद से त्यागपत्र देने की माँग उत्साहपूर्ण वातावरण में की कि आंध्र प्रांत से आकर सुरक्षा दी जाएगी, बशर्ते वे हुए लोगों की तरह रहें और करें। धन्यवाद के साथ हुआ।

www.thearyasamaj.org

**नव निर्वाचित पदाधिकारियों में :** श्री विठ्ठलराव आर्य - प्रधान, श्री डॉ. टी.वी. नारायणजी - उप प्रधान, श्री लक्ष्मणसिंहजी - उप प्रधान, डॉ. श्रीमती वसुधा शास्त्रीजी - उप प्रधान, श्री के. सूर्यप्रकाशजी - उप प्रधान व श्री वेंकट रेड्डीजी (बोधन)-उप प्रधान,

**श्री हरिकिशनजी वेदालंकार - मंत्री,** श्री आर. रामचंद्र कुमारजी - उपमंत्री, श्री पी. जगन मोहनजी - उपमंत्री, श्री डॉ. सी.एच. चंद्रय्याजी - उपमंत्री, श्रीमती डॉ. सुलोचनाजी - उपमंत्री, श्री पी. सत्यनारायणजी - उपमंत्री, श्री अशोक कुमार श्रीवास्तवजी-कोषाध्यक्ष, श्री गुरुनारायणजी - पुस्तकाध्यक्ष तथा

**अंतरंग सदस्य :** श्री ए. देवीदासजी, श्री ठाकुर गोविंद सिंहजी, श्री अरविंद शास्त्रीजी, श्री डी. व्यंकट नरसय्या, श्री पी. विठ्ठलराव, श्री एन. अशोक कुमारजी एडवोकेट, श्री वाचस्पती रेड्डीजी, श्री वंडारी यादगिरीजी, श्री डी. गोपालजी, श्री एम. कृष्णभगवान, श्री सी. वाल रेड्डीजी, श्री एस.व्यंकट रामरेड्डी, श्री सत्यनारायणजी एडवोकेट, श्री जी. आंजनेयुलुजी, श्री एम. कृष्णदेव आर्य, श्री डॉ. रविंद्र गोजे, श्री जयव्रतजी, श्री जी. मल्लिकार्जुनजी, श्री श्री जयराजजी, श्री सत्यव्रत, श्री अनंतय्याजी, श्री एस. राजारामजी, श्री रमेश तम्मेवारजी, श्री विश्वरूपाचार्यजी, श्री वेणुगोपालजी, श्री अन्ना दयानंदजी, श्री एस. लक्ष्मीनारायणाजी, श्री अर्जुन कुमार जायसवाल, श्री एस. शिवपालजी, श्री वेणुमाधव गुप्ताजी, श्री रामचंद्रजी, नारायण प्रकाश लोया, श्री धर्मवीरजी आर्य, श्रीमती डॉ. सुनिता, श्री एस. लक्ष्मीनारायण चौदरगुड़ा, श्री सुभानजी आर्य एवं श्री मामिडी श्रीनिवास अंतरंग सदस्य शामिल हैं।

**सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिदि सभा के लिए निर्वाचित प्रतिनिधि**

श्री विठ्ठलराव आर्य, श्री ठाकुर लक्ष्मण सिंहजी, श्री. आर रामचंद्रकुमार, श्री हरिकिशनजी वेदालंकार, श्री एम. राजारामजी, श्री व्यंकट रघुरामुलुजी, श्री वी. विजयकुमार, श्री सूर्यप्रकाशजी, श्री गुरुनारायणजी, श्री शंकर राव पटेल, श्री. के.वी. रेड्डीजी, श्री श्री शिवकुमार, श्री अशोककुमारश्रीवास्तव, श्री. पी. जगनमोहन श्री जे. वसी रेड्डी, श्री डॉ. सी.एच. चंद्रय्याजी

**संरक्षक समिति के नवनिर्वाचित सदस्य**

१) श्री सुखदेवजी आर्य, २) श्री जगदीश आर्य, ३) श्री जयप्रकाश रामजी, ४) श्री क्रांति कुमार कोरटकरजी, ५) श्री एन. वेंकटेशमजी, ६) श्री डॉ. रामचंद्र भटनागर, ७) श्री श्री धर्मवीरजी (इंजीनियर), ८) श्री बी. सत्यनारायणजी निर्मल, ९) श्री दत्तात्रेय बसप्पा कल्याणीजी, १०) श्री धर्मपालजी नगरी, ११) श्री एम. राजय्याजी, १२) श्री संगमेश्वरजी संगम, १३) श्री काज़ीपेट यल्लाय्याजी, १४) श्री नागभूषणमजी वांसवाड़ा ।

**स्थायी समिति के चयनित सदस्य :** १) श्री नागभूषणमजी वांसवाड़ा २) श्री राम रेड्डीजी घटकेसर ३) श्री पकल यल्लय्याजी काज़ीपेट ४) श्री ध्येयपालजी कृष्णाजी ५) श्री जितेंद्रजी ६) श्री कन्हैयाजी ७) श्री बृहस्पतिजी ८) श्री नागेश्वर रेड्डीजी गद्वाल ९) श्री शंकरजी वांसवाड़ा १०) श्री मामिंडला राजूजी ११) श्री के. वलरामजी गौड़ १२) श्री कंकनाल किशनजी १३) श्री जक्कम रामचंद्र १४) श्री सुधाकर राव पवारजी १५) श्री वी. भद्रय्याजी १६) श्री कुनिगिरी वीरन्नाजी नारायणपेट १७) श्री रमणय्याजी एडवोकेट १८) श्री वडनाल वेंकट रमणाजी १९) श्री एम. ठाकुररायजी २०) श्री विश्वरूपमजी २१) श्री जी. जयप्रकाशजी वरंगल २२) श्री अमंचा विठ्ठलरावजी २३) श्री एस. कृष्णाजी २४) श्री माशेट्टीजी २५) श्री पी. सत्यनारायणाजी लालागुड़ा २६) श्री पुल्लुरी मल्लेश आर्यजी २७) श्री पी. रामवाबूजी २८) श्री के.पी. नरसिंगरावजी २९) श्री सुधाकर रावजी ३०) श्री प्रकाशवीरजी आर्य ३१) श्री अरिगे नरसिम्हलुजी

३२) श्री एम. वेंकट रेड्डीजी ३३) श्री सूर्यप्रकाशजी करीमनगर ३४) आर. अर्जुन कुमारजी ३५) काज़ीपेट वेंकट नरसय्याजी ३६) श्री सुधाकरजी याकुतपुरा ३७) श्री विद्यानाथजी ३८) श्रीमती एम. धनलक्ष्मीजी ३९) ओमप्रकाशजी ४०) पं. गणेशदेवजी ४१) किशन गौड़ अमिस्तापुर ४२) श्री वेणुगोपाल वरंगल ४३) श्री बुद्धजी आर्य ४४) श्री पी. प्रभाकरजी ४५) श्री श्रीनिवास पद्मानगर ४६) श्री नरसिम्हलु गौड़जी ४७) श्री दारा नरसिम्हय्याजी ४८) श्री के. स्वामी ४९) श्री शिवशरणप्पाजी ५०) श्री जी. जनार्दन रेड्डीजी, ५१) श्री जी. श्रीनिवासजी ,५२) सुश्री नागम्माजी ५३) सुश्री संध्याजी ५४) श्रीवृहमानंद रेड्डीजी

**इसके अतिरिक्त एक विशेष केंद्रीय सलाह समिति** का भी गठन किया गया, जिसमें निम्नलिखित महानुभाव शामिल हैं - श्री विठ्ठलराव आर्य, श्री डॉ. टी.वी. नारायणजी, श्री लक्ष्मणसिंहजी, डॉ. श्रीमती वसुधा शास्त्रीजी, श्री के. सूर्यप्रकाशजी, श्री वेंकट रेड्डीजी (बोधन), श्री हरिकिशनजी वेदालंकार, श्री आर. रामचंद्र कुमारजी, श्री पी. जगन मोहनजी, श्री डॉ. सी.एच. चंद्रय्याजी, श्रीमती डॉ. सुलोचनाजी, श्री पी. सत्यनारायणजी, श्री अशोक कुमार श्रीवास्तवजी, श्री गुरुनारायणजी, श्री वेंकट रघुरामुलुजी, श्री. एन. अशोक कुमारजी, श्री व्यंकट नरसय्याजी निजामावाद, श्री नागभूषणमजी वांसवाड़ा, श्री के.वी. रेड्डीजी जडचर्ला, श्री अरविंद शास्त्रीजी, श्री एम. राजारामजी, श्री. वी. भद्रय्याजी, श्री श्री अनंतय्याजी, श्री बंडारी यादगिरीजी, श्री विशवरूपाचारीजी, श्री सत्यनारायणजी एडवोकेट, श्री अर्जुन कुमारजी जायसवालजी, श्रीमती एम. धनलक्ष्मीजी, श्री जे. वसीरेड्डीजी, श्रीमती डॉ.

www.thearyasamaj.org

# देश शक्तिशाली होकर भी कमज़ोर क्यों ?

- *डॉ. चंद्रशेखर लोखंडे*

**(गतांक से आगे)**

हमारे नोजवान सींमा पर अपना अतुल शौर्य दिखाते हैं। शत्रुओं को सीमा से खदेड़ने में अपना सर्वस्व लगा देते हैं, लेकनि दिल्ली में बैठकर नेता उनके पराक्रम की उपेक्षा कर शत्रु राष्ट्र के अनुकूल निर्णय लेते हैं। इ. स. १९६५ में जब पाकिस्तान ने हमारे देश पर हमला किया था, उसको चीन का भी अभय प्राप्त था। ऐसी विकट परिस्थिती में हमारे सैनिकों ने पाकिस्तान के लाहौर तक का भूभाग पदाक्रांत कर लिया था। ऐसा लग रहा था, जिस तरह कश्मीर का बहुत बड़ा हिस्सा पाकिस्तान ने हथिया लिया है, उसी तरह लाहौर तक का भू भाग भारत अपने कब्जे में कर लेगा। लेकिन ताश्कंद समझौते में भारत मैदान की लड़ाई टेबल पर हार गया। यह एक अच्छा मौका था पाकव्याप्त कश्मीर को वापस लेने का। यदि पाकिस्तान कश्मीर के प्रदेश वापिस देता है, तो ही सेना पीछे हटेंगी, इस तरह की शर्त यदि नेता पाक नेताओं के सामने रखते, और कठोरता से इस निर्णय पर स्थिर रहते, तो उन्हें निरूपाय होकर १९४८ में हथियाये कश्मीर को लौटना ही पड़ता। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। इसके विपरीत हमारे सैंकडो सैनिक मारे गये और पाकिस्तान के विजित प्रदेश को भी छोड़ना पड़ा। कुछ दिन पूर्व मई महीने में चीन के प्रधानमंत्री ली केकि यांग भारत आये। इसके कुछ दिन पूर्व ही चीन सेना ने लद्दाख में १९ किलोमीटर प्रवेश कर किया, सेना ने अपने अधिकार में रहकर जितना विरोध करना चाहिए था उतना किया, लेकिन चीन अपनी खुराफातों से बाज़ नहीं आया। यहाँ भारत सरकार को जितना कठोर विरोध दर्शाना चाहिए था, उतना नहीं दर्शाया गया। उसके कुछ दिन बाद ही चीन के प्रधानमंत्री देश के दौरे पर आये। यह भी उनकी एक नीति थी। जैसे १९६२ में चाओ एन लाई युद्ध से पूर्वआये थे और यहाँ के नेताओं की देह-बोली पढ़कर गये थे और कुछ दिन बाद आक्रमण कर दिया था। उसी प्रकार ली केकि यांग चीना सैनिकों के अतिक्रमण के पश्चात भारत के नेताओं पर इसका क्या असर होता है और उनकी क्या प्रतिक्रिया दिखाई देती है यह परखने के लिए ही चीना प्रधानमंत्री आये थे। लेकिन सरकार की ओर से जैसी कठोर प्रतिक्रिया दिखाई जानी चाहिए थी, वह दिखाई नहीं गई। चीनी जैसा चालाक और दगाबाज़ पूरे विश्व में अन्य कोई देश नहीं है। यूपीए सरकार को उसी की हरकत में जवाब देना चाहिए था, लेनिक दे नहीं पाई। जिस तरह बिल्ली के आगे कबूतर आँक बंद कर लेता है, वैसे ही हमारे नेता चीन के आगे सहमकर बैठ जाते हैं। यह शक्तिशाली देश को शोभा देनेवाली बात नहीं है। उसकी हर हरकत पर पैनी नज़र रखी जानी चाहिए। वह नहीं रखी जाती। चीन के प्रधानमंत्री ने टेबल पर जो चालाकी करनी थी, वह कर दी। आज चीन के कब्जे में भारत की ४५,००० वर्ग किलोमीटर भूमि दबी पड़ा है। मानसरोवर और लद्दाख के भू प्रदेश उसी के कब्जे में हैं। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने चीनी प्रधानमंत्री के सामने एक बार भी उस संबंध में बात नहीं उठायी। इसके विपरीत ली केकि यांग ने अतिक्रमण की बात को टालते हुए और सीमा विवाद के नज़रंदाज़ करते हुए तथा ब्रह्मपुत्र नदी और मानसरोवर की यात्रा के समझौते गोलमाल रखकर अपने काल के भारत में निर्यात के संबंध में प्रस्ताव मनवा लिये। यह तो मैदान और टेबल, दोनों पर हारने जैसा हुआ। अगर हम शत्रु पड़ोसियों के साथ इसी तरह पेश आते रहेंगे, तो नित नये पड़ोसी शत्रु निर्माण होते रहेंगे। इसमें कोई संदेह नहीं है। हम अपनी अतिउदारता और अति शालीनता के कारण अपने ओर शत्रु निर्माण कर रहे हैं। जापान, चीन के सामने उतना शक्तिशाली न होते हुए भी अपनी दॉढ़ता से चीन का सामना कर रहा है। वियतनाम और फिलीपीन्स और दक्षिण कोरिया जैसे छोटे देश चीन को अपनी सीमा में रहने की चेतावनी दे रहे हैं, लेकिन भरतवर्ष इतना विसाल और शक्तिशाली होकर भी परिणाम भय के कारण कमज़ोर दिखाई दे रहा है। जो भी हो और जो परिणाम हो, भारत के नेताओं को पारंपरिक भयग्रस्तता को छोड़कर जो जैसा है, उसके साथ वैसी नीति अपनाते हुए चलना होगा। आप काट नहीं सकते, तो कम से कम फुत्कार तो सकते हो। शत्रु को भयग्रस्त तो कर सकते हो। हम इस 'शठेशाठ्यं' री नीति के द्वारा ही पड़ोसियों पर अपनी धाक जमा सकते हैं। तब यह देश मानसिक और भौतिक दृष्टि से और शक्तिशाली होगा।

**विशेष केंद्रीय सलाह समिति..**

सुनिताजी, श्री सी. वालरेड्डीजी, श्री वी. विजयकुमारजी, श्री एम. कृष्णभगवानजी, श्री पी. विठ्ठलरावजी, श्री क्रांतिकुमार कोरटकरजी, श्री वाचस्पति रेड्डीजी, श्री मामिडी श्रीनिवासजी, श्री धर्मपाल नगरीजी, श्री धर्मपाल नगरी, श्री माशेट्टी श्रीनिवासजी, श्री धर्मवीर इंजीनियरजी, श्री देवीदासजी आर्य, श्री धर्मवीर आर्य लालागुड़ा, श्री सत्यव्रतजी, श्री गड़िल आंजनेयुलुजी, श्री पुल्लुरी मल्लेश आर्यजी, श्री दिनेश सिंहजी ठाकुर, श्री जी मल्लिकार्जुनजी, श्री कृष्णदेव आर्य, श्री पं. गणेशदेवजी आर्य, श्री जयराजजी, डॉ. रविंद्र गोजेजी, सुश्री नागम्माजी ,सुश्री संध्याजी, , श्री रमेश तम्मेवारजी, श्री शिवपाल सुलाखेजी, श्री लक्ष्मीनारायणजी चौदरगुड़ा, श्रीबृहमानंद रेड्डीजी एवं श्री सुधाकररावजी पवार ।

www.thearyasamaj.org

# राष्ट्रीय चेतना और हिन्दी पत्रकारिता

- डॉ. भवानीलाल भारतीय

अन्याय और अत्याचार का प्रतिकार करने के लिए आज का समाज पत्र-पत्रकिाओं को एक प्रबल साधन के रूप में स्वीकार करता है। इस संबंध में हमें महाकवि अकबर की उस उक्ति से सहमत होना पड़ता है,- खींचों न कमानों को न तलवार निकालो,। जब तोप मुकाबलि हो, तो अखबार निकालो।

हन्दिी पत्रकारिता ने अपने आरंभ काल से ही राष्ट्रीय चेतना को प्रबल बनाया तथा स्वदेश के गौतम को पुनः स्थापित कर देश की स्वतंत्रता के आंदोलन में अपना बहुमूल्य योगदान दिया। यों तो हन्दिी का प्रथम पत्र उदंड मार्तंड १८२६ में ही प्रकाशित हो चुका था। कन्तिु पत्रकारिता के क्षेत्र में भारतेंदु हरिश्चंद्र तथा उनके सहयोगियों का आगमन एक क्रांतिकारी घटना थी। यह स्मरणीय है किखुद भारतेंदु ने हरिश्चंद्र, कविवचन सुधा, हरिश्चंद्र मैग्जीन तथा बाल बोधिनी आदि पत्रों का संपादन - प्रकाशन कर हिंदी भाषी प्रांतो में राष्ट्रीयता का शंखनाद किया था। उस युग में राजभक्ति तथा देशभक्ति के मिले-जुले स्वर हिंदी पत्रों में सुनाई पड़ते थे। खुद भारतेंदु अंग्रेजी राज को सब सुखों का पास बताते हैं, किन्तु उन्हें यह भी दुख है कि इस राज्य में हमारे देश का धन विदेशों में जा रहा है। वे अंग्रेज़ के गुणों के प्रशंसक हैं तथा यह आशा रखते हैं कि नूतन ज्ञान -विज्ञान तथा नई शिक्षा का प्रचार कर यूरोपवासियों ने भारतवासियों में जो नवचेतना जगाई है, वह अवश्य फलवती होगी। तभी तो भारतेंदु ने लिखा - अंग्रेज़ का राज्य पाकर भी न जगे, तो कब जागोगे? तथा उनकी हार्दिक कामना यहीं तक थी कि भारतवासी अपने अधिकारों को शीघ्र प्राप्त करें। कविवचन सुधा का ध्येय भी यही था- स्वल्प निज भारत गहै।

भारतेंदु मंडल के सभी सदस्यों का किसी न किसी पत्र से संबंध रहा और इन पद्दों के माध्यम से वे अपने पाठकों में स्वेशी भावना राष्ट्रीय अस्मिता, मातृभाषा का गौरव तथा समाज सुधार जैसे आवश्यक प्रश्नों को प्रस्तुत करते रहे। पं. प्रतापनारायण मिश्र कानपुर से ब्राह्मण का संपादनकरते थे। मिश्रजी ने पराधीनताग्रस्त भारत में फैली बोरोज़गारी और भुखमरी का जीवंत चित्र इन शब्दों में व्यक्त किया - जीविका विहीन दीन-हीन लोग आपस में। एकन सों एक कहै जाई कहा करि।।

इसी प्रकार पं. बालकृष्ण भट्ट का मासिक पत्र हिन्दी प्रदीप, पं. बद्री नारायण चौधरी 'प्रेमघन' की आनंद कादंबिनी, तथा पं. राधाचरण गोस्वामी का मासिक भारतेंदु भी देशवासियों में कर्तव्यबोध जागृत करने में पीछे नहीं रहे। इसी समय स्वामी दयानंद नेआर्यसमाज की स्थापना कर उत्तर भारत में धार्मिक और सामाजिक चेतना जगाई, जो कालांतर में राष्ट्रीय चेतना का पर्याय बनी। स्वामी दयानंद का यदा-कदा अपने विचार भारत मित्र (कलकत्ता), देश हितैषी, (अजमेर) तथा भारत सुदशा प्रवर्तक (फर्रूखाबाद) आदि प्रशश्रों में प्रकाशित कर भारतीय प्रजा से मुखातिव होते थे। स्वदेश जागरण के लिए वे आर्थिक स्वावलंबन को महत्वपूर्ण साधन मानते थे। प्रताप नारायण मिश्र ने यह स्वीकर करते हुए लिखा था - जिन-जिन ग्रामों में स्वामीजी की शिक्षा ने प्रवेश पाया है, वहाँ के लोगों ने दिखला दिया कि वे उद्योग, उत्साह तथा दृढ़ता में किसी से कम नहीं है।

भारतेंदु कालीन पत्रकारिता की एक विशेषता यह दिखाई पड़ती है कि इस काल के पत्रकार तथा लेखक विदेशी शासन की आलोचना तथा उसके द्वारा किए जा रहे अत्याचार, अन्याय तथा शोषण का प्रतिकार करने में व्यंग्य-विनोद तथा हास्य रस का अवलंबन लेते हैं। 'भारत मित्र' में बालमुकुन्द गुप्त के जो राजनीतिक लेख छपते थे, वे व्यंग्य -विनोद की चाशनी से परिपूरित होते थे। शिशंभू शर्मा (गुप्ताजी का छद्म नाम) से एक भंगड़ (भांग का व्यसन रखने वाला) अपनी पिकन में बंगाल के गवर्नर तथा भारत के वायसराय लॉर्ड कर्जन को जो तीखी-तल्ख बातें सुना जाते हैं, वह तत्कालीन पत्रकारिता का एक गुर ही तो था। कालांतर में कलकत्ता नगर से ही साप्ताहिक मतवाला का प्रकाशन करने लगा, जिसके सम्पादकीय विभाग में शिवपूजन सहाय, पाण्डेय, बेचैन शर्मा उग्र तथा निराला जैसी त्रिमूर्तियाँ विराजमान थी, हास्य-व्यंगय की रचनाओं को प्रमुखता देने वाला मतवाला सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय पत्र था। पुरातन भारत के गौरव की पुनः स्थापना तथा स्वदेशवासियों ने गौरव एवं स्वाभिमान को प्रतिष्ठित करना उसका प्रमुख लक्ष्य था। महात्मा गांधी के प्रति आस्था रखते हुए भी मतवाला मंडल कई प्रशड्ढनों पर उनसे अपनी असहमती प्रकट करने में संकोच नहीं करता था। अपनी उग्र राष्ट

ड्रीय नीति के कारण मतवाला विदेशी शासन की कुटिलताका पर्दाफाश तो करता ही था, राष्ट्रद्रोहियों को भी उसने कबी नहीं बख्शा। ऐसे लोगों के बारे में मतवाला ने लिखा- पेट मशरूफ है, क्लर्कों में दिल है ईरान और टर्की में।

बीसवीं शताब्दी के आरंभ होने के साथ हिन्दी पत्रकारिता में राष्ट्रीय चेतना के स्वर अधिक प्रखर हो गये। इस युग में बाबूराव, विष्णु पराड़कर, गणेशशंकर विद्यार्थी, माखनलाल चतुर्वेदी जैसे तेजस्वी पत्रकारों ने पत्रों के माध्यम से राष्ट्रीयता की धारा को तीव्रता प्रदान की। पराड़करजी ने अपनी पत्रकारिता कलकत्ता (हिन्दी बंग वासी, हितवार्ता तथा भारत मित्र) आरंभ की थी। किन्तु काशी से प्रकाशित होने वाले दैनिक आज में आकर वे वास्तविक अर्थों में राष्ट्रवाणी को गूंजा सके। पराधीनता के काल में पत्रों के माध्यम से राष्ट्र की पीड़ा को मुखर करना आसान काम नहीं था। प्रेमचंद ने भी जब झिझक और संकोच के साथ जागरण साप्ताहिक को अपने हाथ में लिया, तो सरकार ने उनसे ज़मानत माँगी। आर्थिक कठिनाइयों के कारण जमानत देने में असमर्थ प्रेमचंद को अंततः अपना प६ बंद करना पड़ा। उधर कानपुर के महान स्वदेश भक्त पत्रकार गणेशशंकर विद्यार्थी के लिए पत्र निकालना कठिनाई तथा बाधाओं की पर्वत श्रृंखलाओं को

www.thearyasamaj.org

पार करना ही था। अभ्युदय (इलाहाबाद) में काम करने के अनन्तर गणेशजी ने १९२० में दैनिक प्रताप क्या निकाला, निरंकुश सत्ता रूपी पिटारी में हाथ डाल दिया। रायबरेली में किसानों पर हुई गोलीबारी के विरुद्ध लिखने पर उन्हें जेल यात्राएं करनी पड़ी। प्रताप की जब्ती और ज़मानतें तो कई बार देनी पड़ी। यह तो एक जाना-माना तथ्य ही है कि अमर शहीद भगत सिंह ने भी प्रताप के दफ्तर में बैठकर पत्रकारिता का पाठ गणेशजी सीखा था। इस समय वे बलवन्त सिंह के नाम से पहचाने जाते थे।

द्विवेदी काल की हिन्दी पत्रकारिता ने गांधीवादी चिंतन तथा गांधीजी की अहिंसा की नीति को प्रेणास्रोत बनाया था। माखनलाल चतुर्वेदी, कृष्णकांत मालवीय, यशपाल जैन, हरिभाऊ उपाध्याय, ठाकुर श्रीनाथ सिंह, बनारसीदास चतुर्वेदी आदि पत्रकारों ने गाँधीवादी मूल्यों को अपने पत्रों के माध्यम से प्रचारित और प्रसारित किया। पं. माखनलाल चतुर्वेदी का कर्मवीर जबलपुर से १९२० में उस समय निकला, जबगाँधीजी ने असहयोग आंदोलन का शंखनाद किया। उससे एक वर्ष पहले से वे विद्यार्थीजी के कारावास में रहने के कारण प्रताप का संपादन कर चुके थे। कृष्णकांत मालवीय ने महामना मदनमोहन मालवीय द्वारा स्थापित अभ्युदय का निरंतर २५ वर्ष तक संपादन किया। पं. हरिभाऊ उपाध्याय जहँ राजस्थान की राजनीति सक्रीय रहे, वहाँ उन्होंने त्यागभूमि तथा जीवन साहित्य (गांधी विचारधारा का वाहक) का संपादन भी किया। ठाकुर श्रीनाथ सिंह गाँधीवाद के प्रति समर्पित निष्ठावाले पत्रकार थे। इंणिडयन प्रेस प्रयाग से प्रकाशित पत्रों के संपादन में उनका मुख्य योगदान था। पत्रकार शिरोमणि बनारसीदास चतुर्वेदी ने विशाल भारत तथा मधुकर जैसे साहित्यिक पत्रों का संपादन तो किया ही, वे प्रवासी भारतीयों के अधिकारों तथा उनकी समस्याओं के प्रति जनसाधारण को जागरूक करते रहे। इस प्रकार हिन्दी पत्रकारिता में विदेशों में बसे भारत मूल के लोगों की कठिनाइयों का प्रवेश कराना उनका मुख्य कार्य रहा। महात्मा गाँधी का प्रबल विश्वास था कि देशवासियों में राष्ट्रीय चेतना और जातीय स्वाभिमान की जागृति के लिए राजनैतिक आंदोलन जितने आवश्यक हैं, उससे अधिक वे रचनात्मक कार्य अधिक उपयोगी हैं, जिनसे समस्त भारतीय समाज को एकता के सूत्र में बाँधा जा सकता है। ऐसे कार्यों में वे स्वदेशी को महत्व देते थे। खादी तथा चरखे का प्रचार, शराब बंदी, गोरक्षा, हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार कर उसके प्रचार तथा असांप्रदायिकता को बढ़ाने आदि को मानते थे। उस समय के हिन्दी पत्र सद्भाव उक्त रचनात्मक कार्यक्रमों को बढ़ावा देने के प्रति कटिबद्ध रहे।

पं. अंबिकाप्रसाद बाजपेयी के संपादकत्व में प्रकाशित मासिक 'नृसिंह' को हिन्दी का प्रथम राजनैतिक पत्र कहा जाता है, जो कलकत्ता से १९१७ में तब प्रकाशित हुआ, जब महात्मा गांधी भारते के राजनैतिक क्षितिज पर उदीयमान नक्षत्र की भाँति चमकने लगे थे, किन्तु जनता उन्हें महात्मा न कहकर कर्मवीर मि. गांधी कहकर पुकारती थी। वह ज़माना तिलक, लाला लाजपतराय तथा बिपिन चंद्रपाल का था, जो काँग्रेस के गरम दल के नेता कहलाते थे। नृसिंह की सहानुभूति भी इसी दल से थी, किन्तु राजनीति से बदलकर वह राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को प्रतिष्ठित किए जाने के प्रति समर्पित था। नृसिंह में राष्ट्रभाषा के संबंध में चार लेख छपे। उसने अत्यंत उत्साह से हिन्दी को राष्ट्रीय चेतना का वाहक बताया।

तत्कालीन भारत में उत्पन्न राष्ट्रीय जागृति से देसी रियासतें भी अछूती नहीं रही। राजस्थान में धार्मिक और सामाजिक चेतना राष्ट्रीय जागृति की अग्रदूत बनकर आयी थी। स्वामी दयानंद की कक्षाओं से प्रभावित होकर अजमेर से देश हितैषी, परोपकारी तथा अनाथ रक्षक आदि पत्र निकले, तो उदयपुर के सरकारी गजट को सज्जान कीर्ति सुधारक जैसा सुंदर नाम देने में स्वामी दयानंद की ही भूमिका थी। स्वामीजी के शिष्य मुंशी समर्थनदास ने १८८९ में अजमेर से राजस्थान समाचार निकालकर देशी रियासतों की जनता को दरपेश समस्याओं के प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित किया। राष्ट्रीय समस्याओं के अतिरिक्त वे अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं, स्थितियों तथा समस्याओं के बारे में सटीक टिप्पणियां लिखते थे। जब राजपूताना तथा अन्य राज्यों में स्थित देशी रियासतों में उत्तरदायी शासन स्थापित करने तथा ज़मीनदारी, सामंतवादी शोषण तथा निरंकुश शासन के अत्याचारों को खत्म करने की आवाज़ प्रबल हुई, तो पत्रों और पत्रकारों को भी आगे आना पड़ा। निरंकुश राजशाही ने इन पत्रों का दमन करने में कोई कमी नहीं रखी। पत्रकारों को निर्वासित किया गया, उनके कार्यालयों पर ताले पड़ गये, ज़मानतें माँगी गई, जेल जाना पड़ा। इन सब अत्याचारों को सहकर भी रियासती पत्रकारों ने अपने लक्ष्य को नहीं छोड़ा। देशी राज्यों में स्वतंत्रता की ज्योति जलाने वाले इन पत्रकारों में सर्वश्री जयनारायण व्यास, हरिभाऊ उपाध्याय, विजयसिंह पथिक, शोभालाल गुप्त, अचलेश्वर प्रसाद शर्मा, जगदीश प्रसाद माथुर, दीपक आदि के नाम प्रमुख हैं। जिन पत्रों ने रियासतों में राष्ट्रीयता का शंखनाद किया, उनमें जो उल्लेखनीय रहे, वे हैं नवीन राजस्थान, तरुण राजस्थान, प्रजा सेवक, मीरा, लोकवाणी, रियासती आदि। यहाँ एक बात विचारणीय है। सामाजिक चेतना तथा जागृति राष्ट्र की जागृति समग्र चेतना तथा उसके अभ्युदय की आधारशिला होती है। आलस्य, प्रमाद, अकर्मण्यता तता पुरुषार्थहीनता का शिकार राष्ट्र अपनी अस्थिरता तथा अधिकारों के रक्षण में सदा असमर्थ रहता है। हिन्दी पत्रों ने सामाजिक चेतना को जगाने, नारी उत्पीड़न, अछूतों के प्रति दुर्व्यवहार, नशाखोरी, विधवाओं पर होने वाले अत्याचार तथा अन्य रूढ़ियों एवं कदाचारों को उन्मूलन के लिए सदा से प्रयास किये। इस क्षेत्र में चाँद, सरस्वती, माधुरी, हंस, मनोरमा, मर्यादा आदि पत्रों का महान योगदान रहा है। परंतु आज वे स्थितियाँ नहीं हैं, बल्कि राष्ट्रीय उद्देश्य मात्र धन कमाना है। पत्रकारों में वैसी त्याग भावना, मिशनरी वृत्ति तथा आदर्श के लिए न्योछावर होने की मनोवृत्ति के दर्शन नहीं होते। लगता है पत्रों और पत्रकारों ने राष्ट्रीय चेतना को विकसित करने में उपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर दी और अब वे विस्मृति में नेपथ्य में चले गए हैं।

www.thearyasamaj.org

# गरीब देश के अमीर नेता और भ्रष्टाचार

- गिरीष त्रिवेदी०

भारत एक परिवार है। हम सभी भारतीय आपस में संबंधी हैं। एक की पीड़ा का दर्द दूसरे को भी होता है। एक का छोड़ा हुआ प्रश्वास दूसरा अपनाता है। अर्थात हम सब एक प्राण है। हमारी राष्ट्रीय एकता वड़ी मज़बूत है। किसी एक क्षेत्र में कोई विपदा आन पड़ती है, तो राष्ट्र के कोने-कोने से मदद के हाथ आगे बढ़ते हैं। इतना सब कुछ होते हुए भी हम भारतीयों की आर्थिक स्थिति में बड़ा भेद है। गरीब और गरीब होता जा रहा है। अमीर और अधिक अमीर। इस फासले को घटाना बहुत आवश्यक है। अन्यथा यह अंतर राष्ट्र को किसी भी भयावह मोड़ पर लाकर खड़ा कर देगा। अमीर सुरक्षित नहीं रह पाएगा और आगे ऐसा कुछ भी हो सकता है, जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता और हमारे अड़ेस-पड़ोस के देश तो हमारे दुश्मन है ही, वे तो मौके की तलाश में बैठते हैं। उन्हें भारत की प्रगति फूटी आँख नहीं सुहाती है।

भारत आज़ाद हुआ, तब १९४७ में ८.५ करोड़ लोग गरीब थे। सन २०१२ में ८४ करोड़ लोग गरीब थे। अर्थात आज़ादी के बाद गरीबी २१ गुना बढ़ी। मैं छोटा बच्चा था, तब प्रायः रेडियो में भारत के प्रधानमंत्री की मीठी-मीठी आवाज़ सुना करता था। 'हमें भारत से गरीबी मिटानी है।' हम भारत से गरीबी मिटा देंगे। गरीबी भारत से १० वर्षों में मिट जाएगी। मेरा बाल मन बड़ा पुलकित होता था। वहाँ मैं और मेरे मित्र हम सब गरीब नहीं रहेंगे। मैं बड़े हसीन सपने देखा करता था कि बिना गरीबी के मेरा भारत कैसा दिखेगा? मगर मेरी आँखें आज तक मृग-तृष्णा की तरह बिना गरीबी के भारत का सपना देख रही है।

हाथ से मुँह तक आ जाने वाला कौर बार-बार पूछता रहता है- देश में ४० करोड़ लोग भूखे हैं और तुम... । भारत

परिवार एक परिवार है, तो ऐसा कैसा परिवार, जिसकेआधे सदस्यों को भरपेट खाना नसीब नहीं। गरीब अपना ठीक से इलाज नहीं करवा सकता और पीड़ा भोगता हुआ बेमौत मर भी जाता है। गरीब के बेटे का आज की शिक्षा पद्धति में शिक्षण हो पाना क्या संभव है? गरीब का मानव चोले में जन्म लेना अभिशाप बन गया है। गरीब का बेटा जब पिता के साथ चलते हुए माँग करता है, कोई खिलौना खरीदने को कहता है, तो पिता पहले तो अनसुना करता है। बात नहीं बनती, तो झूठ-मूठ को बच्चे को पूछता है- बोल तुझे क्या चाहिए? यह झुझुना। गरीब पिता व्यापारी से पूछता है, कितने का है? जवाब मिलता है- पंद्रह रुपये का। बच्चे के मुँह में लड्डू फूटते हैं। बस अब कुछ ही पलों में यह खिलौना मेरा हो जाएगा। लेकिन १५ रुपए सुनकर उस गरीब के सर पर घन पड़ता है, जिसकी उसे पूर्व कल्पना थी। अव वह बच्चे को दलीलें देकर समझाता है - ये तो अच्छानहीं है। मैं तुझे इससे भी अच्छा झुन-झुना ला दूँगा। ये तो भद्दा। बच्चा मान जाता है, तो ठीक है। अन्यथा एक करारे थप्पड से बच्चे के खिलौना लेने की इच्छा की हत्या कर दी जाती है। बच्चा कुछ देर रोता रहता है। मगर इस बेरहम दुनिया के क्रूर गणित को समझ नहीं पाता।

पाठक वृन्द ध्यान दें - आज़ादी के ६५ वर्षों तक गरीबी मिटाने का स्वांग करने वाले भ्रष्टाचारियों ने देश के बाहर भारत का धन ४०० लाख करोड़ रुपये जमा करवाकर रखा है। यह काला धन भ्रष्टाचार से जनता की जेब से निकाला हुआ पैसा है। यह ४०० लाख करोड़ वाली बात तो अब जग-जाहिर हो चुके हैं, जिसे स्वामी रामदेवजी बड़े ज़ोर-शोर से कह रहे हैं कि यह राष्ट्र का पैसा वापस राष्ट्र में आना चाहिए और देश के विकास में लगाना चाहिए।

४०० लाख करोड़ रुपये अर्थात इसमें भारत की जनसंख्या का भाग दें, तो प्रति व्यक्ति तीन लाख रुपये से अधिक हुआ। पाँच व्यक्तियों के परिवार का गिनें, तो १६ लाख रुपया भ्रष्ट लोग दबाकर बैठे हैं। यदि ये पैसा जनता से न लूटा जाता है, तो क्या गरीबी रहती? गरीबी के कारण अनेक सुझाये जा सकते हैं। इनमें सत्यता का भास भी होता है। मगर जब तक राष्ट्र में भ्रष्टाचार रहेगा, गरीबी भी रहेगी। भारत एक परिवार है और हमें कतई मंजूर नहीं है कि परिवार का एक सदस्य आधा पेट सूखी रोटी खाकर सोवे, तो दूसरे सदस्य की पाँचों उंगलियाँ गी में हों।

हम सभी भारतवासियों को सच्चे दिल से भारत से गरीबी उन्मूलन के लिए बस अब कमर कस लेनी है। सरकार के भरोसे रहने से कुछ नहीं होने वाला। तो क्या करना होगा ? इसके लिए एक-एक नागरिक का प्रयास महत्वपूर्ण होगा। कुछ काम ऐसे हैं, जो हमारे निजी जीवन से संबंधित हैं, वे हमारे व्यक्तिगत प्रयास होंगे। कुछ कार्य ऐसे होंगे, जो राष्ट्र की जनता मिलकर एकता दिखाकर कर सकती है। तो हमें क्या करना चाहिए ? १) संगठन में शक्ति है इस सूत्र की सीख मानकर सभी राष्ट्रवादी भारतवासियों को सभी भेद भुलाते हुए **(शेष पृष्ठ १८ पर)**

www.thearyasamaj.org

# प्रगतिशील युग में भी नारी बंधन

- डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आज नारी सभी क्षेत्रों में अपने अधिकार प्राप्त कर रही है या कर चुकी है। आज न तो वह अशिक्षित है और न ही पहले की भाँति पुरुष की भोग्या मात्र या उपेक्षिता। आज वह शक्षिति होतर उच्च से उच्च पदों पर प्रतिष्ठित होकर अनेक संस्थानों, राज्यों, तथा पूरे देश तक को चला रही है । कार्यक्षेत्र में पुरुष एवं नारी का भेद-भाव लगभग समाप्त सा है। प्राचीन भारत में भी नारी का यही स्वरूप ता, जो मध्य काल में अमावास्या के चंद्र माँ की भाँति तिरोहित कर कर पुनः पूर्णिमा के चंद्रमाँ की भाँति उदित होकर प्रकाश दे रहा है, किन्तु एक क्षेत्र अभी भी ऐसा है, जिसमें अभी हमें तथा स्वयं नारी को बहुत कुछ करना है, और वह है दहेज की समस्या। इस दानव के चंगुल में जकड़ी हुई नारी आज भी छटपटा रही है। दहेज के अभाव में विवाह के समय उसके सभी गुण गौण हो जाते हैं।

यह अक सामाजिक एवं राष्ट्रीय रोग है। कोई कृपक, मजदूर हो या व्यापारी हो, धनी हो निर्धन हो, राजनेता हो या धार्मिक नेता हो, सब इसमें जकड़े हुए हैं। ऐसे कुछ ही साहसी युवक-युवतियाँ हैं, जो इस लौहमयी शृंखला को तोड़कर दहेज मुक्त विवाह करते हैं। इसके विपरीत असंख्य युवतियाँ दहेज के अभाव में या तो अपेक्षित वर को प्राप्त नहीं कर पाती या कुँवारी ही रह जाती है, कुछ तो आत्महत्या भी कर लेती हैं।

इस दुरावस्था का अपराधी कौन है?

कोई एक व्यक्ति या जाति नहीं, अपितु समूचा समाज तथा राष्ट्र इस अपराध का भागी है। स्वयं नारी भी इसमें सहयोगी है। क्योंकि अधिकांश महिलाएँ भी अपने बेटे के विवाह में प्रचुर धन- संपत्ति लेने की न केवल इच्छा ही रखती है, अपितु कहीं-कहीं तो दवाव भी डालती है। यदि घर की महिलाएँ ही तनकर खड़ी हो जाएँ कि हम बेचे के विवाह में दहेज नहीं लेंगे तथा बेटियाँ भी संकल्प ले लें कि दहेज लोभी से विवाह नहीं करेंगी, तो पुरुष की हिम्मत नहीं होगी कि वह दहेज लें, तथा दें। पत्नी के सहयोग से लेखक ने अपने एक पुत्र तथा दो पुत्रियों के विवाह बिना दहेज के ही किये हैं। सभी बच्चे सुयोग्य तथा सुखी हैं।

प्रदर्सन आज हमारा स्वभाव बन गया है। प्रदर्शन व्यक्ति तथा धन का। शक्ति प्रदर्शनार्थ ही रैलियाँ निकलती हैं तथा धन का प्रदर्शन विवाह आदि

## दहेज रहित अन्तर्जातीय जिम्मेदार प्रेम विवाहों को प्रयत्नपूर्वक बढ़ावा दिया जाना चाहिए

**अपने वार्षिकोत्सव तथा सम्मेलनों में आर्य समाज को जाति तोड़ो-समाज जोड़ो-दहेज छोड़ो सम्मेलन करने चाहिए। अपने क्षेत्र के ५०अथवा १०० ऐसो जोड़ों का विधिवत चयन किया जाये, जिन्होंने जिम्मेदार प्रेम का परिचय देते हुए ५ अथवा १० वर्ष या अधिक पहले ऐसा विवाह किया हो। ऐसे जोड़ों को सपरिवार आमंत्रित कर उन्हें कुछ पारितोषिक, अभिनन्दन पत्र देकर सार्वजनिक रूप से सम्मानित करना चाहिए।**

**ऐसे मौकों पर गणमान्य नागरिकों को भी आमंत्रित कर देहज प्रथा आदि के विरुद्ध भजन, नाटक आदि करने चाहिए। प्रस्ताव पारित कर दहेज रहित अन्तर्जातीय विवाहित जोड़ों के लिए सरकारी तथा निजी कम्पनियों की सेवाओं में १० प्रतिशत आरक्षण की माँग करनी चाहिए। यदि जातिवाद की खुराफात को तोड़कर आर्य-आर्य दहेज रहित शादियाँ गुण, कर्म, स्वभाव आधारित होने लगे,**

www.thearyasamaj.org

कार्यों में किया जाता है। इस कार्य में दहेज लेने तथा माँगने वाला ही दोषी नहीं, अपितु देने वाले भी समान रूप में दोषी हैं। वे स्वयं ही आवश्यकता से कहीं अधिक सामान, फ्लैट, बंगले, कई-कई महँगी कारें तथा प्रचुर नकद राशिदहेज के रूप में देकर अपनी सम्पन्नता का प्रदर्शन करके अपना प्रभाव समाज पर जमाना चाहते हैं। कहीं-कहीं लड़के वाले देकर भी लड़की वालों से उच्च धन-सम्पत्ति लूटते हैं। जिनके पास इती संपत्ति देने के लिए नहीं होती, ३०-३५ साल की लड़कियाँ भी अविवाहित ही बैठी रहती हैं।

दहेज प्रकरण में बेटी तथा बेटे वाले दोनों ही समान रूप से दोषी हैं। क्योंकि धन पति तथा अतुल संपत्ति के स्वामी अपने ऐश्वर्य तथाधन-संपत्ति के प्रदर्शनार्थ अनाप-शनाप खर्च करते हैं। इसका एक उदाहरण यहाँ दिया जा सकता है। १२ फरवरी २०१३ के नव भारत टाइम्स में एक शीर्षक छपा है- 'शादी में नाचने के बदले सलमान ने लिये ३.५ करोड़ । आगे लिखा है - दिल्ली में हुई थी यह शानदार शादी। वैसे शादी इतनी शानदार थी, कि सल्लू के अलावा दूसरे लोगों नें भी वेड्ढिंग में मोटा पैसा कमाया। गौरतलब है कि शादी से जुड़ी सारी बातें गोपनीय रखी गई थी। शादी में बारातियों के लिए विभिन्न तरह के गेम रखे गये थे, जिन्हें जीतने पर लग्जरी कार और पैरिस का दो लोगों का एयर टिकट वगैरह दिये गये। जब बाह्य आडंम्बर पर ही दसियों लाख खर्च कर दिये, दो दहेज कितना दिया होगाय इसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता। एक निर्धन तथा मर्ध्यम दर्जे का व्यक्ति ऐसे प्रदर्शनों को देखकर ऋण लेकर भी अपने सामर्थ्य से अधिक व्यय दहेज आदि के रूप में खर्च करता है।

आज का युग प्रगतिशील कहा जाता है, किन्तु इस प्रकार की कुप्रथाएँ एवं रूढ़ियाँ सम्पूर्ण समाज में व्याप्त है। कोई भी इस प्रकार की महामारियों के विनाश का यत्न नहीं कर रहा है, न ही दहेज को रोकने का कोई यत्न सरकार की ओर से हो रहा है। हाँ, जबरदस्ती माँगने पर तो प्रतिवंध है। होना यह चाहिए कि विवाह में दहेज लेना तथा देना दोनों पर कानूनन प्रतिबंधित होने चाहिए तथा विवाह दहेज के आधार पर न होकर गुण-कर्म, स्वबावानुसार वर्ण-व्यवस्था के आधार पर होने चाहिए। किन्तु प्रतिबंध लगाए कौन? राजनेता, अभिनेता, जननेता तथा धनाढ्य लोग सभी तो इस कुप्रथा के पोषक हैं। यहीं पर वे अपने काले धन को दुनिया की नज़र में जगमगाता हीरा बनाकर दर्शकों की आँखें चौंधिया देते हैं। ऐसे समाज तथा ऐसी राज्य व्यवस्था से तो साम्यवाद ही अच्छा है, जहाँ गलत काम करने वालों पर अकंश तो है। दहेज के विरोध में तो सामाजिक संगठन बनाकर इस कुप्रथा को सर्वथा समाप्त कर देने का निश्चय करना चाहिए। अन्यथा निर्धनों तथा कम धन वालों की कन्याएँ इस महामारी के कारण छटपटाती रहेगी तथा मरती रहेगी। नवभारत टाइम्स में एक समाचार छपा है कि औरंगाबाद के हर्षनगर क्षेत्र में दहेज न देने पर पति तथा ससुराल वालों ने महिला की टाँगें खींचकर उसे चीरने की कोशिश की। महिला को अस्पताल जाना पड़ा। नवभारत टाइम्स में हीएक अन्य समाचार छपा है, जो इस प्रकार है -

'यहाँ रोहिणी कोर्ट में एडिशनल सेशन जज कामिनी ने अपने फैसले में कहा कि दहेज दो तरफा है। जब तक कोई देने वाला न हो, लेने वाला नहीं होगा। इस सामाजिक बुराई को खत्म करने के लिए देने और लेने वाले दोनों को जिम्मेदार ठहराना होगा।' माननीय जज की यह टिप्पणी ठीक इसी प्रकार की है, जैसी कि सम्राट अश्वपति ने कहा था कि मेरे राज्य में कोई भी व्यभिचारी पुरुष नहीं है। ऐसी व्यवस्था में व्यभिचारी स्त्रियाँ तो हो ही नहीं सकती।

इसी प्रकार यदि दहेज देने वाले न हो, तो लेने वाले अपने आप ही समाप्त हो जाएँगे। किन्तु कह देने मात्र से ऐसा नहीं हो सकता। इसके लिए राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक क्रांति तथा जन-जागरण की आवश्यकता है। साथ ही कानून भी कड़ा होना चाहिए, किन्तु स्वयं कानून के रखवाले, बनाने वाले राजनेता तथासमाज का धनाढ्य वर्ग इस माहामारी से ग्रस्त है, तो ऐसे में सुधार की आशा कैसे की जा सकती है? किन्तु यह संभव भी नहीं। जिस प्रकार समाचार पत्र, सामाजिक संस्थाएँ तथा राजकीय स्तर पर किये गये प्रयासों ने अवला नारी को सशक्त बनाकर पुरुष के बराबर ला खड़ा किया है, उसी प्रकार संघर्ष तथा आंदोलन करने से दहेज उन्मूलन भी संभव है। किन्तु यह होगा मध्यम तथा निम्न वर्ग की ओर से ही न कि धनाढ्यों की ओर से, क्योंकि वहाँ तो धन की कोई कमी है ही नहीं, यही नहीं बहुत खर्चीली शादियाँ काले धन के सफेद करने का एक सशक्त माध्यम भी है। पिस तो केवल मध्यम तथा निम्न वर्ग ही रहा है। उसे ही आवाज़ उठानी तथा बगावत करनी होगी। लेखक ने अपने सभी बच्चों के विवाह बिना दहेज के ही किये हैं। जिनमें अन्य व्यक्तियों के अलावा आर्य समाज के गणमान्य जन भी उपस्थित थे। आर्य समाज के इस दिशा में देश का नेतृत्व स्वयं वैसा आचरण करके करना चाहिए तथा आर्य समाजों में गैर जिम्मेदार प्रेम विवाह करने बंद करने चाहिए।

www.thearyasamaj.org

# वेद की दो समस्याएँ

अथर्ववेद में दो मन्त्र आये हैं, वे दोनों मन्त्र दो अध्यात्मिक समस्याओं का प्रकाश कर रहे हैं। वेद का स्वाध्याय करने

वाले स्वाध्यायशील विद्वानों के लिए इन मन्त्रों में अध्यात्म की सूक्ष्म विवेचना बड़ी रुचिकर और लाभप्रद सिद्ध हो

सकती है। समस्याएँ इस प्रकार हैं।

**बालादेक मणीयस्कमुतैकं नैव दृश्यते। ततः परिष्वजीयसी देवता सा मम प्रिया।। (अथर्व १०।४।८)**

एक तत्व है, जो बाल से भी सूक्ष्म है, और एक ऐसा है, जो दिखाई देता ही नहीं, परन्तु जो बाल से भी सूक्ष्म मेरा

प्यारा देवता है, वह उसका आलिंगन किये हुए है। यह बाल से भी सूक्ष्म तत्व क्या है? वह तत्व कौनसा है? जो है,

पर दिखाई नहीं देता। और यह बाल से भी सूक्ष्म प्यारा देवता उसका किस प्रकार आलिंगन किए हुए है। यह त्रिमुखी

समस्या है, जिसका समाधान हम करना चाहते हैं।

मन्त्र में आये हुए दो तत्वों में से यदि एक का भी नाम जान लें, तो दूसरे के नाम को जानने और इसके पारस्परिक

आलिंगन का स्वरूप जानने में कोई कठिनाई न होगी। इनमें से एक का नाम जानने के लिए हम उप निपद् का एक

प्रसंग पाठकों के सामने उपस्थित करते हैं।

**बालाग्रशतभागस्य, शतवा कल्पितस्य च। जीवो भागः स विज्ञेयः,स चानन्त्याय कल्पते।।**

बाल के अग्र भाग के सौ टुकड़े करो और उनमें से भी एक टुकड़े के सेंकड़ों भाग कर दो। उस अत्यन्त सूक्ष्म भाग को

जीव का परिमाण समझो, और इस प्रकार के जीव हैं भी असंख्य और हैं भी अविनाशी।

उपनिषद् के इस मन्त्र ने अथर्व के मन्त्र में आये हुए 'बाल से भी सूक्ष्म' तत्व का नाम स्पष्ट शब्दों में प्रकट कर दिया

है और वह नाम है जीव। जीव का नाम सुनते ही हमें उसके इस साथी का नाम जानने में कोई कठिनाई न होगी, जिसे वेद ने 'न दीखने वाला' कहा है और जिसका आलिंगन किये हुए है। यह उसका आलिंगन तो किये हुए है, परंतु उसे देख नहीं पाता। यह एक विचित्र समस्या है। जीव का प्रकृति के साथ भी सम्बध है, परन्तु यह उसे देखता भी है, और उसका उपयोग भी करता है। 'तयोरन्यः पिप्पलं स्वद्वति'

वह रस रूप है, इसको प्राप्त कर ही यह जीव आनन्दी होता है।

उपनिषत्कार ने यहाँ आनन्द रस-रूप तत्व का नाम लिया है। 'नित्यं विज्ञानमानन्दं ब्रह्म' नित्य विज्ञान-रूप ब्रह्म है। इस वाक्य में आनंद का संबंध ब्रह्म से जोड़ा गया है। जिस प्रकार आत्मा के कर्मों का एक फल प्रकृति रूप वृक्ष के अनेक फलों का उपभोग है, इसी प्रकार ब्रह्मानंद रूपी फल की प्राप्ति भी उसके कुछ विशिष्ट कर्मों का फल मानी गई है। यह वही ब्रह्मतत्व है, जिसका आलिंगन तो जीव ने किया हुआ है, परंतु उसके आनंद रूप फल का उपभोग तो दूर की बात है। अभी तो वह उसका दर्शन करने में भी समर्थ नहीं हो पाया है। हमने यह जान लिया है कि इस मन्त्र में बाल से भी सूक्ष्म जिसे कहा गया है, वह जीव है और यहाँ जिसे न दिखने वाली शक्ति कहा गया है, वह ब्रह्म है। ब्रह्म व्यापक है और जीव एकदेशी, इसलिए इस एकदेशी का व्यापक ब्रह्म के साथ संयोग अर्थात् आलिंगन भी अनिवार्य ही है। अब प्रश्न यही शेष है कि जब यह उससे संयुक्त ही है, तो उसे देख क्यों नहीं रहा? समस्या के इस अंश का समाधान ही हम एक दूसरी समस्या को उपस्थित करना चाहते हैं।

वह समस्या निम्न लिखित है -

**पंचवाही वहत्यग्रमेषां, पृष्ठयो युक्ता अनुसंवहन्ति।**

**अयातमस्य वद्दशे न यातं नेदीयो अवरं दवीयः।। (अथर्व कां. अ. ४ सूत्र ८)**

एषाम् इन गाड़ियों में से 'अग्रम' प्रधान इंजन रूप गाड़ी 'पंचवाही वहति' पाँच शक्तियों के समुदाय रूप गाड़ी को लिये जा रहा है। 'पृष्ठयो युक्ताः' पीछे चलने वाली जुड़ी हुई 'अनुसंवहन्ति' इसके पीछे-पीछे-पीछे भार लिये जा रही है, 'अस्य' इसका न तो न चलना दिखाई देता है, और न चलना। 'परं नेदीयः अवरं दवीय' इतना अवश्य है कि जो परे था, वह समीप आ रहा है और जो समीप था, वह दूर हो रहा है।

यह है दूसरी समस्या, जिसमें अपना भी और पहली समस्या का भी समाधान है। हमारा प्रधान अंतःकरण रूप इंजन पाँच ज्ञानेंद्रियों से गाड़ी को लिये जा रहा है। कर्मेंद्रियाँ और पाँच प्राण रूप गाड़ियाँ इनके पीछे जुड़ा हुई पीछे-पीछे चल रही हैं। इसके चलने, न चलने का कुछ भी पता नहीं चल रहा। इतना अवश्य है कि जो दूर था, वह समीप आ रहा है और जो समीप ता, वह दूर जा रहा है।

वेद में जिस अलंकारिक गाड़ी का वर्णण किया गया है, पंचवाही शब्द के सामने आते ही उस गाड़ी का पता लगाने में कोई कठिनाई नहीं होती। इसका स्पष्ट वर्णण ऊपर के भावार्थ में हम कर ही आये हैं। अब शेष रह जाती हैं दो बातें। एक तो यह कि उसके चलने और न चलने का कुछ पता नहीं चलता। और दूसरी यह कि दूर वाले समीप आ रहे हैं और समीप वाले दूर जा रहे हैं। चलती हुई गाड़ी के चलने और न चलने का पता न लगाने का केवल यही कारण हो सकता है कि गाड़ी हमारी आँखों से ओझल हो। हमारी यह अलंकारिक गाड़ी आध्यात्मिक गाड़ी है और आध्यात्मिक गाड़ी की चाल का पता लगाने मेंआंखें तो समर्थ है नहीं । आँखों का काम भौतिक पदार्थों को देखना है। आध्यात्मिक पदार्थों को देखना उनका काम नहीं है। ज्ञान आदि आध्यात्मिक पदार्थ उनकी पहुँच से बाहर हैं। हमारी आंतरिक आँखें अंतःकरण की आँखें हैं।

परंतु मंत्र के भाव से प्रकट है कि वह भी इस यात और अयात को देखने में असमर्थ हैं। क्योकि यदिं देख सकता है, तो मन्त्र में न दृश्यते - नहीं दिखाई देता- ऐसा न कहा जाता। इस समस्या को सुलझाने वाला वाक्य मन्त्र में आगे पढ़ा गया है।

**(शेष पृष्ठ १८ पर)**

www.thearyasamaj.org

## नवनिर्वाचित अधिकारियों और सदस्यों को शपथ दिलाते हुए

# चुनाव अधिकारी श्री आर.एस. तोमरजी और श्री धर्मपाल शास्त्रीजी

अधिवेशन में उपस्थित प्रांतभर से पधारे हुए प्रतिनिधिगण

www.thearyasamaj.org

मुख्य निर्वाचन अधिकारी श्री आर. एस.तोमर दिल्ली उप चुनाव अधिकारी श्री कृष्णमूर्तिजी , सार्वदेशिक सभा के पर्यवेक्षक श्री मधुर प्रकाशजी एवं श्री धर्मपाल शात्रीजी चुनाव को सम्पन्न करते हुए

मुख्य निर्वाचन अधिकारी श्री आर. एस.तोमर दिल्ली का सम्मान करते हुए नवनिर्वाचित अधिकारी

उप चुनाव अधिकारी श्री कृष्णमूर्तिजी , सार्वदेशिक सभा के पर्यवेक्षक श्री मधुर प्रकाशजी एवं श्री धर्मपाल शात्रीजी का सम्मान करते हुए नवनिर्वाचित अधिकारी महामंत्री श्री हरिकिशनजी वेदालंकार उप प्रधान श्री सूर्यप्रकाशजी, श्री लक्ष्मणसिंहजी,

www.thearyasamaj.org

# हिन्दी-पत्रकारिता को आर्य समाज की देन

**- डॉ. भवानीलाल भारती**

आर्यसमाज को हिन्दी पत्रकारिता को जन्म देने वाली अग्रणी शक्ति स्वीकार कर लिया जाए, तो इसमें कोई आपत्ती या अत्युक्ति नहीं होगी। हिन्दी पत्रकारिता के विकास में आर्य समाज ने ऐतिहासिक भूमिका का सफलता पूर्वक निर्वाह किया था। महर्षि दयानंद सरस्वती के जीवनकाल के कुछ वर्ष पूर्व ही ४ अप्रैल १८२३ ई. को अंग्रेज़ सरकार ने समाचार पत्र तथा मुद्रण संबंधी नूतन कानूनों को चरितार्थ किया था। स्वामीजी की शिशु अवस्था के काल में युगल किशोर शुक्ल ने कलकत्ता से प्रथम पत्र साप्ताहिक उदन्तमार्तण्ड के प्रवेशांक ३० मई, सन १८२६ को प्रकाशित किया था।

स्वामी दयानंद सरस्वती ने अपने सिद्धांतों के प्रचार हेतु पत्रकारिता के महत्व को स्वीकार, इसलिए उन्होंने आर्य भाषा में पत्र-पत्रकाओं के मुद्रण-प्रकाशन व्यवस्था की स्थिति को संपुष्ट किया। इस दिशा में ब्राह्म समाज ने भी उनको प्रभावित किया था। यद्दपि २० अगस्त, सन १८२८ ब्राह्म समाद के संस्थापक राजाराम मोहनराय, सन १८७२- १८७३ इनके अग्रगामी थे। परंतु दयानंद सन १८२४-१८८३ सन १८७२ में कलकत्ता पहुँचे थे। जहाँ ब्राह्म समाज की गतिविधियों ने उनको सोचने-समझने के उपयुक्त अवसर प्रदान किए थे। नवविधान समाज २४ जनवरी १८६८ ई. के प्रवर्तक केशवचंद्र सेन १८३८-१८८४ तक स्वामीजी के मित्र थे, जो कि बांग्ला में साप्ताहिक सुलब-समाचार और मासिक वामा बोधिनी सन १८६३ में प्रकाशित करते थे। इसी परिवेश ने स्वामीजी को भी पत्रकारिता की ओर समुचित रूप में उन्मुख किया।

स्वामीजी ने सम-सामयिक परिस्थिति के कारण आर्य-समाज की स्थापना की, जिसने पत्रकारिता के संबंध में तत्कालीन परिवेश से प्रभावित तथा निर्देशित करने की सार्थक चेष्टा की। उक्त युग में भारतेन्दु युग सन १८७५-१९०० के प्रवर्तक भारतेंदु हरिश्चंद्र सन १८५० - १८८५ और स्वामी दयानंद ने हिन्दी पत्रकारिता के साहित्यिक तथा सामाजिक पक्ष का न केवल प्रवर्तन ही किया, अपितु उसका नेतृत्व भी किया। तत्कालीन पत्र-पत्रिकाएँ स्वामीजी के विज्ञापनों, सूचनाओं, पत्रों तथा समाचारों को भ्रामक रूप में प्रकाशित करते थे, अतएव स्वामीजी ने स्वतंत्र तथा पृथक रूप से पत्रकारिता के सम्वर्धन का दृढ संकल्प किया था। स्वामीजी आर्य- समाज, वैदिक दर्म-भाषा और सामाजिक सुधार हेतु पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन के परम इच्छुक थे। सनातनी तथा ईसाइयों के आघात, आक्रमण और दुष्प्रचार के निराकरण एवं समाधान हेतु स्वमीजी ने पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन आवश्यक समझा। स्वामीजी की प्रेरणा से उनके सामइक युग में अनेक पत्र-पत्रिकाओं का सुचारू रूप से प्रकाशन हुआ।

महर्षि दयानंद के जीवन की सांध्यबेला में आर्य दर्पण, सन १८७० में आर्य भूषण, सन १८८६ तथा भारत सुदशा प्रवर्तक सन १८७९ प्रकाशित हुए थे। शाहजहाँपुर से मुंशी बख्तावर सिंह के सम्पादन में आर्य दर्पण, जो कि सन १९०६ तक प्रकाशित होता रहा और उसने पश्चिमोत्तर प्रांत में आर्य समाज आंदोलन की गति में वृद्धि लाने हेतु क्रियात्मक योगदान दिया था। यहीं से दूसरा मासिक-पत्र आर्य-भूषण निकला था।

स्वामीजी ने बारत दुर्दशा समर्थक मासिक का नाम - परिवर्तन कर उसे भारत सुदशा प्रवर्तक कर दिया था। यह गणेश प्रसाद शर्मा के सम्पादन में फर्रूखाबाद आर्यसमाज प्रकाशित करता था। इस वार इसमें नाटक प्रकाशित हो गया था, जिसके कारण दयानंदजी ने अपने १६ अक्तूबर १८८२ के पत्र द्वारा सम्पादक को भविष्य में नाटक प्रकाशित न करने का आदेश दिया। यह मासिक लंदन भी जाता था। बाद में यह जुलाई, १९२१ ई. में साप्ताहिक हो गया। स्वामीजी के स्वर्गवास के पश्चात १९वीं शताब्दी के विशेषांक, सन १८८२ में प्रकाश और वेदप्रकाश में आर्य समाचार एवं आर्य विनय, सन १८८७ में आर्य सिद्धांत और आर्यव्रत, १न १८८८ में भारत-भगिनी, सन १८८९ में राजस्थान समाचार एवं सत्धर्म प्रचार, सन १८९० में पोरपकारी तिमिर नाशक ब्रह्मावर्त और सन १८९७-९८ आर्य मित्र और पांचाल पंडित प्रकाशित हुए।

दयानंद सरस्वती की पुनित प्रेरणा से सन १८८४ में उनके निधन के एक वर्ष पश्चात तुलजाराम खांडवाला के सम्पादकत्व में बम्बई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र आर्य प्रचार प्रकाशित हुआ था।

वास्तव में उपरोक्त पत्र पूर्ण रूप में वेदधर्म प्रचारिणी सभा सन १८८१ का मासिक मुख-पत्र था। जिसका तीन-चार वर्ष का ही जीवन-काल रहा, यह पत्र उसकी स्मृति में चला और उक्त सभा के सदस्य आर्य समाज में सम्मिलित हो गये थे। मासिक पत्र के सम्पादक मोतीलाल दलाल और प्राण जीवनदास गुप्त थे। सन १८९३ में साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन स्थगित हो गया। बीच के तीन-चार वर्षों तक यह बडौदा से भी प्रकाशित हुआ। इसका पुनर प्रकाशन हुआ और इसके सन १८१८ तक सम्पादन राघवेंद्र शास्त्री बने।

आर्य-समाचार, मेरठ का मासिक था और आर्य-विनय मुरादाबाद का सम्पदकाचार्य रुद्रदत्त शर्मा का व्यक्तित्व। आर्य-विनय तथा आर्यवर्त के साथ रहा है। भारत-भगिनी ने नारी-उत्थान और शिक्षा में पूर्ण योगदान दिया था।

www.thearyasamaj.org

साप्ताहिक राजस्थान - समाचार को अजमेर से मुंशी समर्थदास ने निकाला था। सत्धर्म-प्रचारक के प्रवर्तक स्वामी श्रद्धानंद थे। परोपकारिणी सभा अजमेर से और ब्रह्मावर्त खिरी से संबंधित था। परोपकारिणी और आर्य मित्र पुराने मासिक हैं। पांचाल पंडिता, जलंधर ने वही कार्य कार्य किया, जो कि भारत-भगिनी ने।

मध्य प्रदेश तथा विदर्भ आर्य प्रतिनिधि सभा की मासिक मुख पत्रिका आर्य सेवक सन १९०० से बीसवीं शताब्दी की आर्य समाज पत्रिका का श्रीगणेश होता है। इनके पाक्षिक रूप के सम्पादक नृसिंहपुर के गणेश प्रसाद शर्मा थे और सन १९७२ विशेष उल्लेखनीय है। आर्य-समाज शताब्दी के साथ इसकी हीरक जयंती रायपुर में मनाई जा चुकी है।

महर्षि दयानंद सरस्वती की प्रथम जन्मशताब्दी सन १९२५ तक आर्य समाज ने अनेक पत्र-पत्रिकाओं प्रकाशन किया।

सन १९०९ में मासिक भारतोदय ज्वालापुर और मासिकी उषा लाहौर, सन १९१० में मासिक नवजीवन तथा साप्ताहिक सत्य सनातन धर्म, कलकत्ता सन १९१४ में मासिक अमर्य लाहौर, सन १९१८ में साप्ताहिक ब्रह्मा- मेरठ और धर्मवीर साप्ताहिक सन १९१९ में तथा मासिक आर्य कुमार और द्विमासिक वैदिक मार्तण्ड- कोल्हापुर। सन १९२० में मासिक भारतीय- जालंधर और साप्ताहिक 'श्रद्धा' कांगडी, सन १९२३ में दैनिक अर्जुन और साप्ताहिक आर्य मार्तण्ड- अजमेर, सन १८२४ में मासिक अलंकार, कांगड़ी मासिक आर्य जगत् - पंजाब, सिंध, बलुचिस्तान आर्य प्रतिनिधि सबा, आर्य गजट - लाहौर, आर्य जीवन, बंगाल - बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा और मासिक गुरुकुल समाचार, सन १९२५ में साप्ताहिक सत्यावादी और साप्ताहिक प्रकाशित की गई थी।

गांधीयुग सन १९२०-१९४८ में आर्य समाज की अनेक पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हुईं, जिन्होंने भारतीय स्वाधीनता संग्राम में अविस्मरणीय योगदान दिया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र सार्वदेशिक सन १९२७ में प्रकाशित हुआ। इसके विशेषांक ऐतिहासिक महत्व रखते हैं, जिनमें स्वामी श्रद्धानंद बलिदान-अंक २४ दिसंबर १९६५ और महर्षि दयानंद जीवन विशेषांक २० अगस्त १९६७ उल्लेखनीय हैं। दैनिक हिन्दी मिलाप सन १९२८ - जालंधर, मासिक 'वेदोदय' सन १९३० प्रयाग, साप्ताहिक गुरुकुल सन १९३६ कांगड़ी, आर्य संदेश सन १९३६ -३७ आगरा, दैनिक तथा साप्ताहिक जागृति, सन १९४०- बंगाल, साप्ताहिक जागृति सेन, बंगाल सम्राट, सन १९४७ दिल्ली आदि महत्वपूर्ण रहे हैं। स्वतंत्र भारत में आर्य समाज ने अनेक पत्र-पत्रिकाओं का प्रवर्तन - संचालन किया। जिनमें गुरुकुल कांगड़ी की मुख पत्रिका सन १९४८, मासिकी, 'वेदवाणी' सन १९४९ वाराणसी मासिक वेद पथ सन १९४९ सहारनपुर, मानव पथ सन १९५२ (दिल्ली) और मासिकी आर्य शक्ति संवत् २०१० बम्बई विशेष उल्लेखनीय है।

आर्य समाज ने हिन्दीके अनेक श्रेष्ट पत्रकार सम्पादक दिये, जिनमें महात्मा मुंशीरामजी, १८५६ से लेकर १९२६ सम्पादक आचार्य रुद्रदत्त शर्मा, डॉ हरिशंकर विद्यालंकर, कृष्मचंद विद्यालंकर, जयंत वाचस्पति अरविंद कुमार विद्यालंकार आदि के नाम महत्वपूर्ण हैं। गणेश शर्मा गुरुदत्त महाशय कृष्ण आदि आर्य समाज के तपस्वी पत्रकार थे। आज-कल अनेक आर्य समाज अपने मुख्य पत्र प्रकाशित कर रहे हैं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पत्र प्रकाशित कर रहा है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मुख्य पत्र साप्ताहिक सार्वदेशिक के सम्पादक ओम प्रकाश त्यागी और सह सम्पादक रघुनाथ प्रसाद पाठक हैं। तथा अखिल भारतीय देवानंद सेवाश्रम संघ के प्रमुख मासिक पत्र का सम्पादन आर्य युवक नेता एवम् प्रसिद्ध पत्रकार श्री अशोक कुमार भारद्वाज, श्री ओम प्रकाश त्यागी संसद सदस्य कर रहे हैं। इसका मॉरिशस आर्य सम्मेलनांक सितंबर -अक्तूबर १९७३ अविस्मरणीय है। परोपकारी सभा, अजमेर का प्रमुख पात्र मासिक परोपकारिणी है। जिसका सम्पादन डॉ. मानकरण शारदा, श्रीकरण शारदा, प्रबंद सम्पीदक डॉ. भवानीलाल भारतीय, आदर्श सम्पादक डॉ. शिवपूजन सिंह कुशवाह हैं। इसमें महर्षि दयानंद स्मारक न्यास, टंकारा पत्रिका भी सम्मिलित है। परोपकारी के प्रत्येक वर्ष प्रकाशित कृषिमेला विशेषांक द्दष्टव्य है। उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र आर्य मित्र हैं, जिसके सम्पादक उमेशचंद्र स्नातक और आचार्य रमेशचंद्र हैं तथा प्रबंध सम्पादक नारायण प्रिय रहे है। दक्षिण आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र आर्य भानु है। १९४५ से ५२ तक विनायकराव विद्यालंकार, खंडेराव कुलकर्णी, पं. कृष्ण दत्त आदि के सम्पादकत्व में प्रकाशित होते रहे। तदनंतर पं. नरेंद्रजी ने विवृति एवं मासिक आर्य जीवन निकाला, जिसके सम्पादक पं. नरेंद्र रहे। स्वाध्याय मंडल बम्बई की मुख पत्रिका मासिक वैदिक धर्म है, जिसके संस्थापक श्रीपाद दामोधर सातवलेकर हैं। इसके संम्पादक नवीनचंदपाल हैं। परामर्शदाता में सत्यकाम विद्यालंकार, महेशचंद्र शास्त्री रहे हैं। दिल्ली दीवान हाल आर्य समाज का मुख मासिक 'आर्य' गजट है, जिसके आदरणीय सम्पादक म. आर्य भिक्षु और व्यवस्था संपादक दुर्गादास शर्मा रहे हैं।

आर्य समाज स्थापना शताब्दी अप्रैल, १९४५ के सांस्कृतिक अवसर पर अनेक पत्र-पत्रिकाओं के विशेषांक प्रकाशित किये। जिनमें साप्ताहिक सार्वदेशिक, दिल्ली, आर्य मित्र - लखनऊ, आर्य गजट-दिल्ली, वैदिक धर्म- मुंबई, परोपकारी, साप्ताहिक मानव प्रहरी - उज्जैन के नाम चर्चित हुए। परोपकारी ने मार्च १९४५ में महर्षि दयानंद आत्मकथा विशेषांक निकालकर हिन्दी जगत् की अपूर्व सेवा की। आर्य समाज की स्थापना- शताब्दी के अवसर पर परोपकारी के सचिव विशेषांक के रूप में परोपकारी सभा की एक महत्वपूर्ण देन है।

www.thearyasamaj.org

# मीड़िया मदमस्त हाथी हो गया है।

- एल.एल. हरदेनिया

इस समय सारी दुनिया में टीवी चैनलों और प्रिंट मीड़िया की भूमिका पर ज़ोरदार बहस छिड़ी हुई है। इस बहस का प्रारंभ ब्रिटेन के निवर्तमान प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर ने किया है। अपने प्रदानमंत्रित्व काल में प्रेस से अपने संबंधों की विस्मृत चर्चा करते हुए ब्लेयर ने प्रेस व टीवी चैनलों पर गंभीर आरोप लगाए। ब्लेयर ने मीडिया को एक मदमस्त हाथी बताया। उसका आरोप था कि मीड़िया पूरी तरह संवेदनाविहीन हो गया है। टोनी ब्लैयर की टिप्पणी से पूरे ब्रिटेन और यूरोप को अनेक देशों में एक तूफान आ गया। अनेक बुद्धिजीवियों ओर जन प्रतिनिधियों ने ब्लेयर की बात का समर्थन किया, परंतु काइयों की राय थी कि वैसे तो टोनी ब्लेयर को मीड़िया की आलोचना करने का नैतिक अधिकार नहीं है, फिर भी उन्होंने जो कहा है, वह पूरी तरह सही है। टोनी ब्लेयर के विचारों का समर्थन भारत में बीबीसे के पूर्व संवाददाता सर मार्कटुनी बीकिया है। इसके अतिरिक्त इसी तरह के विचार देश के विख्यात पत्रकार एवं जनसत्ता के संपादकीप्रट सलाहकार प्रभाश जोशी ने प्रकट किए हैं।

बंगलौर में एक पत्रकारिता संस्थान में दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए मार्कटुली ने कहा कि टोनी ब्लेयर ने ठीक ही कहा है कि मीड़िया एक जंगली जानवर हो गया है। टीवी चैनल जिस प्रकार से हिंसक घटनाओं को दिखाता है, वह अत्याधिक गैर जिम्मेदाराना होता है। इस तरह के कवरेज में मानव संवेदनाओं की पूरी तरह उपेक्षा की जाती है। टीवी के ये रिपोर्टर कैमेरा के माध्यम से ऐसी बातें करते हैं, जैसे कोई मृत व्यक्ति से बात कर रहे हो, इस संदर्भ में उन्हें बनारस में हुए बम विस्फोट का उदाहरण दिया। इस घटना का कवरेज एक चैनल ने इस प्रकार से किया, जिससे बनारस में सांप्रदायिक दंगा भड़क सकता था। यदि ऐसा नहीं हुआ, तो उसका श्रेय बनासर के नागरिकों को जाता है।

सर मार्क ने कहा कि इस समय इन चैनलों में चटपटी और हिंसा दिखाने की होड़ सी लगी हुई है। इससे सत्य की बलि चढ़ती है। जिस ढंग से घटनाओं की मिमांसा की जाती है, उससे ऐसा लगता है, कोई व्यक्ति एक गधे का पीछा कर रहा है और उसकी लातें खा रहा है। इस समय मीड़िया का पूरी तरह व्यापारीकरण हो गया है। एक समय ऐसा था, जब समाचारपत्र में संपादक का दबदबा रहता था, उस समय अखबार के मालिक भी बिना पहले से समय निर्धारित कर संपादक से नहीं मिल सकते थे। इस समय बहुसंख्यक रिपोर्टर नकारात्मक खबरों की ही तलाश में रहते हैं। वे भूल जाते हैं कि अभी भी समाज में अच्छे अधिकारी व राजनीतिज्ञ हैं।

मीड़िया में गिरावट की विस्तृत चर्चा प्रभाश जोशी ने बोपाल में प्रसिद्ध संपादक स्वर्गीय एन. राजन की स्मृति में एक व्याख्यान देते हुए की। आपने कहा कि वैचारिक भिन्नता के इस दौर में अखबारों में इस बात की होड़ लगी है कि जो जितना अपठनीय होगा, उतना ज्यादा से ज्यादा पढ़ा जाएगा। सच्चाई यह है कि आज अधिकांश अखबार बौद्धिक प्रतिबद्धता से अलग हो चुके हैं। यह इसलिए भी दुःखद, भारत के अखबारों के बीच इस बात की ज्यादा होड़ है कि कौन कितना अधिक दिखावा कर सकता है। अखबारों की प्रमुख चिंता है कि यदि टीवी सब कुछ ले जाएगा, तो उसके पास क्या बचेगा। स्थिति यह हो गई है कि जो अखबार जितना अपठनीय होगा, उतना ज्यादा से ज्यादा पढ़ा जाएगा। विचार के मूल पक्ष को रखने के कारण ही आज मीड़िया ने स्वयं के भीतर कुछ ऐसी प्रवृत्तियों को ढाल लिया है, जो वस्तुतः उसका काम नहीं है। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक चक्रवर्ती राजगोपालचार्य से बड़ा कोई संपादक नहीं हुआ। जिन्होंने न सिर्फ देश की, बल्कि दुनिया की आदतों को बदल दिया। उन्होंने कहा कि मीड़िया की समझ और निज स्वार्थ देश के लोगों की समझ व हितों के विपरीत जा रहा है। मीड़िया के असल चरित्र की चर्चा करते हुए श्री जोशी ने सवाल किया कि लोकतंत्र मीड़िया की प्राणवायु है। यदि मीड़िया पूँजीपतियों की राय को अपनी राय जताने लगा, तो लोकतंत्र के रक्षकों का क्या होगा? उन्होंने एक मैच के दौरान अम्पायर द्वारा सौरव गांगुली को बॉलिंग करने से रोकना और राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम को पुनः राष्ट्रपति बनाए जाने जैसी बातों को लेकर टीवी चैनलों एसएमएस, ईएसएस और सर्वे नीति पर चुटीले ढंग से प्रहार भी किया। उन्होंने कहा कि स्वर्गीय राजन उस परम्परा के नहीं थे, तो जो मीड़िया को मनोरंजन का साधन बनने देते।

टीवी देखने व सुनने के लिए और अखबार पढ़ने के लिए है। खाली देखने और सुनने से मनुष्य का काम चल जाता, तो वह लिखने पढ़ने का आविष्कार नहीं करता। दृश्य-श्रव्य और मुद्रित माध्यमों में बुनियादी फर्क है। इसके बावजूद टीवी चैनलों के चक्कर में कई अखबारों में अपठनीय होने की होड़ चल पड़ी है। संपादक की प्रतिभा क्षेत्र विशेष तक ही सीमित नहीं होनी चाहिए। उसकी गति जीवन के हर क्षेत्र में होनी चाहिए। ऐसे सम्पादक अब दुर्लभ और घटते जा रहे हैं। खासकर दृश्य-श्रव्य समाचार माध्यमों की भूमिका पर सवाल उठाते हुए.जोशी ने कहा कि इन माध्यमों के सरोकार जनकेंद्रित न होकर टी.आर.पी. केंद्रित हो गए हैं। मीड़िया के निहित स्वार्थ उसे देश की आम जनता की समझ और हितों से अलग ले जा रहे हैं। इसकी ताज़ा मिसाल उत्तर प्रदेश विधानसभा के गत चुनाव के नतीजे हैं। वहाँ जनता एक दल को पूरा बहुमत देने के जिस नतीजे पर आसानी से पहुँच गई, उस पर मीड़िया नहीं पहुँच पाया। वह उस आम आदमी के सरोकारों से नहीं जुड़ कही है, जिसके लिए देश की राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक प्रकिया में मददगार बनने के बजाए, मीड़िया उसमेंदखल देना चाहता है। वह भी सुधार के लिए नहीं, बल्कि अपनी टी.आर.पी. के लिए।

जोशी ने कहा कि टी.वी. चैनलों के पत्रकार आए दिन राजनीति के प्रति लोगों में हिकारत की भावना भरेंगे, तो देश किसी दिन तानाशाही के शिकंजे में होगा। तब मीड़िया भी आज़ाद नहीं रहेगा।

लोकतंत्र के बिना मीड़िया के जनमत सर्वेक्षणों का केंद्र बिंदू नामचीन लोग होते हैं, आम जनता नहीं, गरीब को और गरीब और अमीर बनाने वाली अर्थव्यवस्था पर उसका फोकस नहीं है। देश के फकत १० फीसदी लोगों की आमदनी गिर रही है। देश में सबसे ज्यादा और सबसे कम कमाने वाले की आय में ९० लाख गुना का फर्क है।

www.thearyasamaj.org

# ఋషి దయానంద వచనామృతము

హిందీ సంకలనం : స్వ. దేవవ్రత ధర్మేందు

తెలుగు అనువాదం : చలవాది సోమయ్య

**తీర్థములు**

123 వేదాది సత్య శాస్త్రాలను చదవడం చదివించడం, ధార్మిక విద్వాంసుల సాంగత్యము, పరోప కారము, ధర్మానుష్ఠానము, యోగా భ్యాసము, వైరత్యాగము, నిష్కపటము, సత్య భాషణము, సత్యమును అంగీకరించడం, సత్యాచరణము బ్రహ్మచర్యము, ఆచార్యుడు అతిథి మాతా పితలసేవ, పరమేశ్వరుని స్తుతి ప్రార్థన ఉపాసనలు, శాంతి, జితేంద్రి యత్వము, సుశీలత, ధర్మయుక్త పురుష ప్రయత్నము, జ్ఞానము, విజ్ఞానము మొదలైన శుభగుణ కర్మలు దుఃఖాల నుండి తరించాలనుకునే వారికి తీర్థములు.

**మాతృభాష**

124 తన మాతృభాషలో మాట్లాడ డమే ఉత్తమం స్వదేశీయులలో కూర్చుండి విదేశీ భాష మాట్లాడుతూ ఉండడం అంతగా ప్రసిద్ధము కాదు. కాని ఇలా చేయడం అసహ్యంగా ఉంటుంది. మరియు ఇందులో గర్వం కూడ ప్రకటమౌతుంది.

**మా గ్రంథాలను చదవండి**

125 మన శరీరం ఎక్కువ కాలం వరకు ఉండదు. మీరు జీవిత పర్యంతం మా గ్రంథాల నుండి సందేశం (సమా చారం) గ్రహించుతూ ఉండండి. ఎంత వరకు సాధ్యమైతే అంత వరకు త్రోవ దప్పిన సోదరులకు కూడ సన్మార్గం చూపుతూ ఉండండి.

**మృత్యువును జయించడానికి యోగాభ్యాసం**

126 నేను తీవ్ర వైరాగ్య వశుడనై యవ్వన సమయంలోనే నా పూజ్య మాత పిత కుటుంబ సభ్యులను వదలి మృత్యువును జయించుట కొఱకు యోగాభ్యాసం చేస్తున్నాను.

**ధర్మం కూడ అందరికీ ఒకటిగా ఉండాలి**

127 పరమాత్మునిచే రచింప బడిన పదార్థాలు అందరి కొఱకు ఒకటిగా ఉన్నాయి. సూర్యుడు, చంద్రుడు అందరికి సమానమైన ప్రకాశాన్ని యిస్తున్నాయి వాయువు మరియు జలాది వస్తువులు అందరికీ ఒకే విధంగా యివ్వబడినాయి ఎలాగైతే ఆ పదార్థాలు ఈశ్వరునిచే యివ్వబడినాయో సర్వప్రాణుల కొఱకు ఒకటిగా ఉన్నాయో అలాగే పరమేశ్వర ప్రసాదిత ధర్మం కూడ మనుష్యుల కొఱకు ఒకే ఒకటిగా ఉండాలి.

**మనుష్యులను ఇలా కలపాలి**

128 మనుష్యులను ఈవిధంగా కలపడం నాఉద్దేశ్యమై ఉంది. సమస్త సముదాయములను (సమూహము లను) ఒకత్రాటిపైకి తేవాలి. కోయలు భిల్లులు (అడవి జాతివారి) నుండి (బ్రాహ్మణుల వరకు అందరిలో ఒకే జాతీయ జీవన జాగరణము (జాగృతి) రావాలని నేను కోరుతున్నాను. నాలుగు వర్ణముల వారు (బ్రాహ్మణ, క్షత్రియ, వైశ్య శూద్రులు) ఒకరు ఇంకొకరికి అంగములు (అవయవములు)గా గ్రహించండి.

**ఆర్య జాతి పుత్రికలు**

129 ఈ కాలంలో ఆర్యజాతి పుత్రికల (స్త్రీల) స్థితి ఎంతో చింతించ దగినదిగా ఉంది. వీరు ప్రపంచము లోని సమస్త భ్రమలు మరియు దురాచారములకు కేంద్రములుగా తయారు చేయబడినారు.

**ఆర్య సమాజకులు నా శిష్యులు**

130 నా శిష్యులు ఇప్పటి కిప్పడు ఆర్యసమాజకులుగా ఉన్నారు. వారే నా విశ్వాసము మరియు నమ్మదగిన సుందర భవనమై ఉన్నారు. వారి పురుషార్థము (ప్రయత్నము) మీద నా కార్యముల పూర్తి మరియు మనో రథముల సాఫల్యము ఆధారపడి ఉన్నాయి.

**జీవన్ముక్తి పొందడమెలా?**

131 ఎవరు ముక్తిని కోరతారో వారు జీవన్ముక్తి అంటే ఏ అసత్య భాషణాది పాపకర్మల ఫలం దుఃఖమో వాటిని విడిచి పెట్టి సుఖరూప ఫలము లిచ్చు సత్యభాషణాది ధర్మాచరణము తప్పక చేయాలి. ఎవరు ఏదైనా దుః ఖాన్ని విడిచి సుఖాన్ని పొందదలిస్తే అతడు అధర్మాన్ని విడిచి తప్పక ధర్మాన్ని ఆచరించాలి. ఎందుకంటే దుఃఖానికి మూలం పాపాచరణం సుఖానికి మూలం ధర్మాచరణం కనుక.

వివాహం ఎవరు చేసికోరాదు.

132 ఏ పురుషునికి లేక స్త్రీకి విద్యను ధర్మాన్ని వృద్ధి చేయడం మరియు సమస్త ప్రపంచానికి ఉపకారం చేయడమే ప్రయోజనం (ఉద్దేశ్యం) అవుతుందో అతడు వివాహం చేసికోరాదు.

**బ్రహ్మచారి ఎలా ఉండాలి**

133 ఎక్కడైతే విషయ సుఖాలు లేక అధర్మం యొక్క చర్చ (సంభాషణ) జరుగుతున్నదో, అక్కడ బ్రహ్మచారి ఎప్పడూ నిలువరాదు. దేనివలన ఎప్పడూ రోగము, వీర్యహాని లేక ప్రమాదము (పొరపాటు) జరుగదో అటు వంటి భోజనము, వస్త్రధారణ చేయాలి బుద్ధిని నశింపజేసే ఏయే మత్తు పదార్థాలు ఉన్నాయో వాటిని ఎప్పడు కూడ తీసికోరాదు.

**స్వామి (యజమాని) సేవకుల సంబంధం**

134. యజమాని తన హస్త పాదాది అవయవాలను రక్షించుకొనడానికి ఎలా ప్రయత్నిస్తాడో అలా సేవకునితో వర్తించాలి. ఎలా అన్నము, జలము, వస్త్రము మరియు గృహాదులు శరీర రక్షణకొఱకు ఉన్నాయో అలా సేవకుడు యజమానుల కొఱకు వర్తించాలి.

**ఆర్యులు**

135. ఆర్యులు ఈరాన్ నుండి వచ్చారని మరియు యిక్కడి ఆటవికులతో యుద్ధం చేసి జయించి వారిని తరిమి ఈదేశపు రాజులయి నారని ఏ సంస్కృత గ్రంథము లేక చరిత్రలో వ్రాయబడలేదు. అంతే గాక విదేశస్థులు వ్రాసినది ఎలా అంగీకరిం చబడగలదు?

www.thearyasamaj.org

**వేదాలు**

136. నేను వేదాలనే అన్నిటి కంటె మిన్నగా అంగీకరిస్తాను. వేదగ్రంథమనే జండా క్రిందకు సమస్త ఆర్యులు రాదగియున్నారు. కనుక ఏ మనుష్యుడు నేను వేదాలను అంగీక రిస్తానని మరియు అంగీకరించ కుండా ఉండ కూడదు.

**ప్రపంచ స్వాభావిక ప్రవృత్తి**

137. అనేక అవసరాలకు మించి అధిక ధనం చేకూరినపుడు సోమరి తనము, పురుషార్థ రాహిత్యము, ఈర్ష్య, ద్వేషము, విషయ సుఖముల ఎడ ఆసక్తి మరియు ప్రమాదము (నిర్లక్ష్యము వృద్ధి పొందడం ఈ ప్రపంచానికి స్వాభావికమైన ప్రవృత్తి. దీని వలన విద్య, సత్ప్రవర్తన నశించి దుర్గుణాలు మరియు దుర్వసనాలు పెరిగి పోతాయి.

పరమేశ్వర న్యాయవ్యవస్థ

138 ఎవరు పాషాణాది మూర్తులను అంగీకరించక సర్వదా సర్వవ్యాపకుడు సర్వాంతర్యామి, న్యాయకారి అయిన పరమాత్మను అన్ని చోట్ల తెలిసికొని మరియు అంగీకరిస్తాడో ఆ మనుజుడు సర్వత్ర, సర్వదా పరమేశ్వరుని సమస్త పుణ్యపాప కర్మలకు ద్రష్ట (సాక్షి)గా గ్రహించి ఒకక్షణం కూడ పరమాత్మ నుండి తాను వేరుగా లేనని తెలిసికొని చెడు కర్మ చేయుటకు దూరంగా ఉంటాడు. మీదు మిక్కిలి మనసులో చెడుకర్మ కూడ చేయలేడు. ఎందుకనంటే నేను మనసులోగాని, మాటలో గాని మరియు కర్మద్వారా గాని ఏ కొంచెం చెడు కర్మ చేసి నప్పటికి ఈ అంతర్యామి (పరమేశ్వ రుని) యొక్క న్యాయ వ్యవస్థ నుండి దండన పొందకుండ ఎప్పుడూ రక్షింప బడలేనని అతడు ఎరిగియున్నాడు కనుక.

మనిషికి సహజంగా ఉండేది.

139 మనుష్యులకు ధర్మవిచక్షణ జ్ఞానం పెరిగి తగిన విధంగా సత్యాసత్యముల అభిప్రాయము మరియు కర్తవ్య అకర్తవ్య (చేయదగిన చేయదగని) కర్మ సంబంధ విషయములను తెలిసికొని సత్యము మరియు కర్తవ్య కర్మలను స్వీకరించుట, అసత్యము మరియు అకర్తవ్యకర్మలను విడుచుట అనునది సహజంగానే ఉంటుంది.

యూరోపియన్‌లను స్తుతించడం

140. ఋషులు మహర్షులు చేసిన ఉపకారాన్ని గౌరవింపక క్రీస్తు మొదలైన వారి వెంట పడడం మంచిది కాదు. బ్రహ్మ మొదలు ఆర్యా వర్తంలో అనేక మంది విద్వాంసులు వచ్చారు వారిని ప్రశంసించక యూరో పియనుల స్తోత్రంలో దిగిపోవడం పక్షపాతము మరియు ముఖస్తుతి కాక ఏమని చెప్పాలి?

**ఉన్నతి ఎలా కలుగుతుంది.**

141. ఎంతవరకు ఒకే మతము, ఒకే హానిలాభము, ఒకేసుఖ దుఃఖము పరస్పరము అంగీకరింపబడదో అంత వరకు ఉన్నతి కలగడం కఠినమౌ తుంది.

**ఆర్యుల చక్రవర్తిరాజ్యం**

142. సృష్టి మొదలు కొని 5వేల సంవత్సరాలకు పూర్వం వరకు ఆర్యుల యొక్క సార్వభౌమ చక్రవర్తి రాజ్యం అంటే భూగోళంలో సర్వశ్రేష్ఠమైన ఒకే ఒక రాజ్యం ఉండేది. ఇతర దేశాల్లో మాండలిక అంటే చిన్న చిన్న రాజులు ఉండేవారు.

**ఆర్యవంశజుల దురదృష్టం**

143. సృష్టి మొదలు కొని మహాభారత (యుద్ధ) పర్యంతం చక్రవర్తి సార్వభౌమరాజులు ఆర్యవంశ జులలోనే ఉండేవారు. ఇప్పుడు వీరి సంతానం యొక్క దురదృష్టం వలన రాజ్యము భ్రష్టమై విదేశస్తుల పాదా క్రాంతమౌతున్నది.

**స్వదేశ వస్త్రధారణ**

144. తన దేశం యొక్క వస్త్ర ధారణ తనదిగా చేసి కోవడంలోనే శోభ (కాంతి, అందము) ఉన్నది.

**సత్యోపదేశం చేయడంలో స్వామి నిష్ఠ**

145. ఒకవేళ జనులు మాచేతి వ్రేళ్ళను దీవవు వత్తులుగా చేసి కాల్చినప్పటికి కూడ ఏమాత్రం చింతలేదు. నేను అక్కడకు (జోధపూర్) వెళ్ళి తప్పక సత్యోపదేశం చేస్తాను.

**నన్నేదీ ప్రలోభపెట్టలేదు**

146. మీరు నాకు తుచ్ఛమైన (నీచమైన, అల్పమైన) ఆశచూపించి పరమాత్మ దేవుని నుండి విముఖుణ్ణి చేయాలను కుంటూన్నారా? అతని ఆజ్ఞను (నాతో) భంగం చేయించాలను కుంటున్నారా? రాణాగారూ మీ ఈ చిన్న రాజ్యం మరియు మందిరం నుండి ఒక్క పరుగుతో బయటకు వెళ్ళగలుగుతాను. ఇది నన్ను అనంత ఈశ్వరుని ఆజ్ఞను భంగపరచడం కోసం వివశుణ్ణి చేయలేదు. పరమాత్మ దేవుని యొక్క పరమ ప్రేమ ఎదుట ఇది మరుభూమి (ఎండమావి) యొక్క మాయావినీ మృగతృష్ణ అత్యల్పమైంది. లక్షలాది మనుష్యుల యొక్క విశ్వాసం కేవలం నా నమ్మకముపై ఆధారపడి ఉంది. నాతో ఇటువంటి మాటలు చెప్పడానికి మళ్ళీ ఎప్పుడూ సాహసం చేయకండి. నా ధర్మదృఢ సంకల్పాన్ని భూతలము మరియు ఆకాశంలోని ఏవస్తువు కూడ చలింపజేయలేదు.

**ధర్మ రక్షణలో ప్రాణంపోయినా వెనుదీయరాదు.**

147. ఎవరు మనన శీలుడై ఇతరుల సుఖ దుఃఖాలను, హాని లాభాలను తనవిగా గ్రహిస్తాడో అతడే మనుష్యుడని చెప్పబడతాడు. అన్యాయ కారి బలవంతుడైనను భయపడరాదు మరియు ధర్మాత్ముడు బలహీనుడైనా అతనికి భయపడుతూ ఉండాలి. ఇంతేకాదు తన సర్వ సామర్థ్యంతో ధర్మాత్ములు ఒకవేళ వారు గొప్ప అనాథులు, బలహీనులు, మరియు గుణరహితులు అయితే కావచ్చుగాక వారికి రక్షణ, ఔన్నత్యము కలిగిస్తూ ఇష్టమైనది చేస్తుండాలి. మరియు అధర్మాత్ముడు చక్రవర్తి, సనాథుడు, మహా బలవంతుడు గుణవంతుడైతే కావచ్చుగాక అయినప్పటికి అతనికి హాని, పతనము, మరియు అప్రియాన్ని ఎప్పుడూ చేస్తుండాలి అంటే ఎంత వరకు వీలైతే అంతవరకు అన్యాయ కారుల యొక్క బలానికి హాని మరియు న్యాయకారుల బలానికి ఉన్నతని కలిగిస్తూ ఉండాలి. ఈ కార్యం వలన ఒకవేళ అతనికి ఎంతో దారుణ దుఃఖం ప్రాప్తించవచ్చు. ప్రాణంకూడ పోవచ్చు కాని, ఈ మానవత్వ రూప ధర్మాన్నుండి ఎప్పుడూ విడిపోరాదు.

**ఒకే మతం ఏర్పడడమెలా?**

Continue in next issue

Date: 12-08-2013

www.thearyasamaj.org

**(पृष्ठ ६ का शेष)**

एक नेतृत्व के नीचे संगठित होना होगा। आज देशभर में नई आज़ादी, नई क्रांति का आंदोलन चल रहा है। आखिरकार हमें कम से कम ५० से ६० करोड़ लोगों का 'महा संगठन' राष्ट्रवादी महा वोट बैंक बनाना है। इसी से संभव होगा भारत की दरिद्रता का निवारण।

२) व्यक्तिगत स्तर पर दैनिक प्रयोग में आने वाली छोटी-छोटी वस्तुएँ जैसे साबुन, कपड़े, जूते, तेल, खाद्य पदार्थ इत्यादि ऐसे खरीदे, जो छोटे स्तर पर गरीब व्यक्तियों द्वारा निर्मित हो। याद रखें, विदेशी कंपनियों के मॉल का बहिष्कार और छोटे आदमी को प्रोत्साहन गरीबी मिटाने में काफी हद तक कारगर सिद्ध होगा। बड़ी कंपनियों और बड़े-बड़े ब्रांड नामों का मोह छोड़ क्षेत्रीय उत्पादों को जीवन में अपनाना गरीब को रोज़गार देने का काम करेगा। बड़े मॉल का बहिष्कार और छोटी से छोटी दुकानों से खरीद या ठेले या हाट बाज़ार से खरीद भी गरीब को रोज़गार देगा। क्षेत्रीय सामान को गुणवत्ता खरा होते हुए भी विज्ञापन युग में गुमनामी में पिछड़ जाता है, को ही अपनाना ही राष्ट्र प्रेम का एक नमुना होगा। खाद्यतेल में मल्टीनेशनल कंपनियों ने भारत भर में अपना व्यापार जमा रखा है। हमें इसे भी छोड़ ऑइल मिलों के तेल क प्रयोग करना चाहिए। वस्त्रों में पूरी तरह खादी नहीं अपना सकें, तो कम से कम हमारे तौलिये, चद्दर, घर में पहनने कपड़े और वाहर के लिए भी कुछ कपड़े तो खादी के हम अपना ही सकते हैं। मात्र इससे भी बहुत फर्क पड़ेगा।

३) गरीब व्यक्ति अशिक्षित बेरोज़गार और भूख के मारे राष्ट्रहित और स्वहित बीनहीं सोच पाता है। इसकी ऊँचा सोचने की क्षमता दब जाती है। गरीबी व्यक्ति की बुद्धि, प्रतिमा, स्वास्थ्य आदि सब कुछ हर लेती है। इस तरह के गरीब देश के नेता अमीर हैं, करोड़पति हैं। यह विरोधाभास क्यों? गरीबी उन्मूलन के लिए जब सोचाजाता है, तो हर किसी को गरीबी के कारण अशिक्षा, अधिक संतानों का होना, व्यसन और बेरोज़गारीही नज़र आते हैं, मगर ये गरीबी के कारण नहीं है। गरीबी के कारण उत्पन्न हुई परिस्थितियाँ हैं। भ्रष्टाचारी को शासन करना है, तो सत्ता में बने रहने के लिए गरीबी ही सर्वाधिक उपयोगी है। गरीब बिक सकता है। देशहित को न सोचकर बहकावे में आकर वोट दे सकता है। झूटे वायदों में विश्वास कर सकता है, तो भ्रष्ट शासकों के लिए चुनाव जीतने के लिए गरीब अति उपयोगी है। यदि गरीबी मिट गई, तो दो हज़ार में वोट विकेगा कैसे?

अतः प्रिय पाठकों को अब हम जागरूक नागरिकों का कर्तव्य बनता है कि हम विना विचारे मतदान करने वालों को वोट बेचने वालों को ठीक-ठीक समझाए कि सोच-विचार कर गंभीरता पूर्वक राष्ट्रहित में निःस्वार्थ भाव से मतदान करें, जो गरीब को रोज़गार उपलब्ध करवाने, व्यसनों से मुक्ति दिलाने आदि में सच्चे दिल से सोच रखता है, जिसकी कथनी और करनी में फर्क न हो, जिसने पहले जनता को धोखा न दिया हो, जिसका पिछला जीवन चरित्र पारदर्शी एवं निष्कलंक हो, ऐसे ही राष्ट्रभक्तों को अगले लोकसबा चुनावों में मतदान दिलवाया जाए, तो गरीबी मिश्चित रूप से मिट सकती है।

**- सत्यार्थ सौरभ से साभार**

---

**(पृष्ठ ७ का शेष)**

**'परं नेदीयो अवरं दवीयः'**

'दूर वाले समीप आ रहे हैं और समीप वाले दूर जा रहे हैं। तो गाड़ी की चाल का पता लगाना हमारे लिए कठिन न रह जाएगा। क्योकि गाड़ी यदि चलती है, तो जो पदार्थ आगे दूर थे, वे लमीप आ ही जाते हैं। और जो हमारे पास थे, वे पीछे दूर ही रह जाते हैं। फिर तो 'इसके आने-जाने का पता नहीं लग रहा' इस वाक्य का कोई मूल्य ही नही रहेगा। इसलिए 'परं नेदीयो अवरं दवीयः' - दूर के समीप आ रहे हैं और समीप के दूर जा रहे हैं - इस वाक्य का भाव कुछ और ही है, और वही इस मन्त्र की और पहले मन्त्र की भी समस्या का समादान है।

प्रकृति का जीव से भोग्य और भोक्ता का संबंध तो है, परंतु गौणिक संबंध भी है। जीव का चैतन्य गुण है और प्रकृति जड़ है। इसलिए प्रकृति से जीव का गुण की समता वाला सम्बन्ध नहीं है। जिस प्रकार प्रकृतिसे उसका संबंध है, उसी प्रकार जीव का ब्रह्म से संबंध है, परंतु ब्रह्म से उसका गुण के द्वारा सम्बन्ध है। ब्रह्म भी चेतन है और जीव भी। ब्रह्म ज्ञान का भांडार है और जीव अल्प ज्ञान वाला है। ज्ञान की शक्ति उसे ब्रह्म से मिल सकती है प्रकृति से नहीं। जीव की वास्तविक गति है उसका ब्रह्म की ओर जाना। उसके शरीर, इन्द्रीय, प्राण, मन, आदि यदि उसे ब्रह्म की ओर ले जा रहे हैं, तब तो समझो कि उसकी गाड़ी चल रही है। परन्तु यहाँ तो स्थिति ही और है। हम अपने एक मात्र साधन अंतःकरण के ऊपर प्रकृति के अनेक चित्र बनाते आ रहे हैं। इसलिए पाठ यह हम पढ़ रहे हैं। 'परं नेदीय' जो प्रकृति और प्राण हमसे सर्वथा दूर है, वह ही संस्कारों के रूप में हमारे अन्तःकरण में इकट्ठी होती जा रही है। यही कारण है कि इस प्रकृति अथवा अज्ञान के पर्दे के कारण हमें अपने ज्ञान की गाड़ी की चाल का पता नहीं लग रहा है। जिस प्रकार हम अंधेरे में कुछ नहीं देख सकते, उसी प्रकार अज्ञान के अंधःकार में भी कुछ नहीं देख सकते। इसलिए अपनी गति को देखने के लिए हमें प्रकृति के प्रभाव को दूर कर ब्रह्म के प्रभाव की छाप अन्तःकरण पर लगानी होगी।

पहले मन्त्र की समस्या का भी इस मन्त्र का यही वाक्य समाधान है। ब्रह्म का हमारे साथ सम्बन्ध है। उसके साथ जीव का ज्ञानी होने के कारण संयोग है, परंतु अब जीव ने अपने चारों ओर अन्तःकरण में प्रकृति के संस्कारों का जाल बिछा दिया है। इसलिए इस ज्ञान के अन्धकार के कारण वह अपने पास होते हुए भी ब्रह्म के स्वरूप को नहीं देख सकता। ब्रह्म के स्वरूप को देखने के लिए हमें अविद्या के संस्कारों से पीछा छुड़ाकर ब्रह्म की ओर जाना होगा।

www.thearyasamaj.org



# हैदराबाद आर्य सत्याग्रह बलिदान दिवस

## दि. २१ अगस्त २०१३ बुधवार के दिन मनाइए

हैदराबाद सत्याग्रह में अपने प्राणें की आहुति देने वाले आर्य वीरों की पुण्य स्मृति में प्रतिवर्ष सभा के आदेशों की पूर्ति तथा कर्तव्य पालन के उद्धेश्य से इस वर्ष श्रावण शुक्ल पूर्णिमा तद्नुसार गुरुवार दिनांक २१ अगस्त २०१३ को प्रत्येक आर्य समाज मन्दिर में सत्याग्रह बलिदान दिवस मनाया जाएगा इसी दिन श्रावणी का पुण्य पर्व है। कार्यक्रम श्रावणी उपाकर्म के साथ मिलकर निम्न प्रकार मनाया जायगा। प्रातः ८.३० बजे आर्य समाज मन्दिर में नगर निवासियों को बड़ी संख्य में आमन्त्रित करके यज्ञादि किये जाएँ। उपाकर्म-कार्यक्रम के पश्चात व्याख्यान आदि का विशेष प्रबन्ध किया जाए तथा उपस्थित सब भद्र पुरुष एवं देविया सम्मिलित रूप से निम्न प्रकार मन्त्रों का पाठ करें।

१.ओ३म् ऋ तावान् ऋ तजाता ऋ कोवृधो घोरासो अनृतद्विष। तेषां वसुम्ने सुच्छर्दिष्टिमे नमः स्याम वे च सुरयः।। ऋग्वेद ७,६६,१३

२. ओ३म् अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्। इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि।। यजुर्वेद २, ५

३. ओ३म् इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। अपध्नन्तो अराह्वणः।। ऋग्वेद १,६३,५

४. ओ३म् उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्या अस्मभ्य सन्तु पृथिवी प्रसूताः। दीर्घ न आयु प्रतिबुध्यमाना वयं तुभ्यं बलह्यतः स्याम।। ऋग्वेद १,६३,५

१. आर्य समाजों के पुरोहित अथवा अन्य कोई वेदज्ञ विद्वान् उपर्युक्त मत्रों का तात्पर्य इन शब्दों में पढ़कर प्रार्थना करायें। जो विद्वान सदा सत्य के मार्ग पर चलते हुए सत्य की निरन्तर वृध्दि और असत्य के विरोध में तत्पर रहते हैं उनके सुखदायक आश्रय से हम सब सदा सुखी रहें और हम भी उनकी तरह मन, वचन और कर्म से पूर्ण सत्यनिष्ठ बनें।

२. हे ज्ञानस्वरूप सब उत्तम संकल्पों और कर्मों के स्वामी परमेश्वर हम भी आज से एक उत्तम व्रत ग्रहण करते हैं जिसको पूर्ण करने की शक्ति आप हमें प्रदान कीजिए जिससे कि उस व्रत को ग्रहण करने से हमारी सब ओर से उन्नति हो। वह व्रत यह है कि असत्य का सर्वथा परित्याग करके हम सत्य को ही आचरण में लावें। आप हमें शक्ति दें ताकि हम अपने जीवन को पूर्ण सत्यमय बना सकें।

३. हे मनुष्यों तुम सब आत्मिक शक्ति तथा उत्तम ऐश्वर्य को बढ़ाते हुए कर्मनिष्ठ बनकर उन्नति में बाधक आलस्य प्रमादादि दुर्गुणों का परित्याग करते हुए सारे संसार को आर्य अर्थात् श्रेष्ट सदाचारी धर्मात्म बनो और बनाओ।

४. हे प्रिय मातृभूमि हम सब तेरे पुत्र और पुत्रियाँ तेरी सेवा में उपस्थित होते हैं। हम सर्वथा निरोगी, स्वस्थ तथा ज्ञान सम्पन्न होते हुए दीर्घ आयु को प्राप्त हों और तेरी तथा धर्म की रक्षा के लिए आवश्यकता पड़ने पर हम अपने प्राणों की बलि देने को भी तत्पर रहें।

### धर्मवीरों के प्रति श्रद्धांजलि

श्रध्दांजलि अर्पण करते हम, करके उन वीरों का मान।
धार्मिक स्वतन्त्रता पाने को, किया जिन्होंने निज बलिदान।।
परिवारों के सुख को त्यागा, युवक अनेकों वीरों ने।
कष्ट अनेकों सहन किये पर, धर्म न छोड़ा वीरों ने।।
ऐसे सभी धर्मवीरों के, आगे शीष झुकाते हैं।
उनके गुण-कर्मों को हम, निज जीवन में अपनाते हैं।।
अमर रहेगा नाम जगत में, इन वीरों का निश्चय से।
उनका रहेगा नाम जगत में, इन वीरों का निश्चय से।
उनका स्मरण बनाएगा फिर, वीर जाति को निश्चय से।।
करें कृपा प्रभु आर्य जाति में, कोटि-कोटि हों ऐसे वीर।
देश धर्म हित खुशी-खुशी, जो प्राणों को अपने दे वीर।।
जगतपिता को साक्षी रख कर, यही प्रतिज्ञा करते हैं।
इन वीरों के चरण चिह्न पर, चलने का व्रत धरते हैं।।
सर्व शक्तिमय दे बल ऐसा, धीर वीर सब आर्य बनें।
पर उपकार परायण निशिदिन, शुभ गुणधारी आर्य बनें।।

### धर्मवीर नामावली

श्यामलालजी, महादेवजी रामाजी श्री परमानन्द।
माधवराव, विष्णु भगवन्ता, श्री स्वामी कल्याणानन्द।।
स्वामी सत्यानन्द महाशय, मलखना श्री वेदप्रकाश।
धर्म प्रकाश, रामनाथजी, पाण्डुरंग, श्री शान्ति प्रकाश।।
पुरुषोत्तमजी ज्ञानी, लक्ष्मणराव, सुनहरा वेंकटराव।
भक्त अरोड़ा, नाथुरामजो, नन्हूसिंह, श्री गोविन्दराव।
मदनसिंहजी, रतिरामजी, शिवचन्द्र, सदाशिव, ताराचन्द्र।
श्रीयुत छोटेलाल, अशर्फीलाल तथा श्री फकीरचन्द।।
माणिकराव, भीमरावजी, महादेवजी, अर्जुनसिंह।
सत्यनारायण, बैजनाथ, ब्रह्मचारी दयानन्द नरसिंह।।
राधाकृष्ण सरीखे निर्भय अमर हुए इन वीरों का।
स्मरण करें विजयोत्सव के दिन सब ही धीरों वीरों का।।

**भवदीय**

**विट्ठलराव आर्य** एम.एससी., एलएल.बी., प्रधान सभा

आर्य प्रतिनिधि सभा, आन्ध्र प्रदेश, महर्षि दयानन्द मार्ग, सुलतान बाजार, हैदराबाद - ५०० ०९५

www.thearyasamaj.org

**अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् रत्न धातमम्।। १,१,१।।**

पूर्ण रूप से हित करने वाले, यज्ञ के प्रकाश यज्ञ के प्रवर्तक, ऋतु के अनुसार यज्ञ करने वाले दिव्य विबुधो एवं ज्ञानियों को अपने पास बुलाने वाले रत्नों के धारण कराने वाले तेजस्वी अग्रणी (नेता) के गुणों का वर्णन करता हूँ।

# वेद प्रचार सप्ताह

**तिथि श्रावण शुक्ल प्रतिपदा से श्रावण कृष्ण अमावास्या २०७० विक्रमी**

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गत वर्ष कि भांति इस वर्ष भी वेद प्रचार सप्ताह तिथि श्रावण शुक्ल प्रतिपदा संवत् २०६९, तदनुसार २० जुलाई २०१३ शुक्रवार से २१ अगस्त २०१३ बुधवार तक बड़े समारोहपूर्वक सभी आर्य समाजों में मनाने का निश्चय किया गया है। इसका उद्देश्य मानवमात्र की परम पवित्र सत्यसनातन धर्म पुस्तक ऋग, यजु, साम एवं अथर्ववेद का आशामय संदे जनता तक पहुँचाना है जिससे जनता में वैदिक धर्म, आर्य-संस्कृति और आर्य सभ्यता की प्रगतिशील व्यवहारिकता के प्रति सक्रिय आकर्षण एवं रुचि उत्पन्न होकर वेदाध्ययन का प्रवचन, वैदिक जीवन का संचार तथा पवित्र वैदिक वातावरण का निर्माण हो सके। आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि समस्त आर्यसमाजें कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए पूर्ण प्रयास करेंगे।

## कार्यक्रम

सप्ताह का आरम्भ श्रावण मास की प्रतिपदा से आरम्भ होता है। सप्ताह भर का कार्यक्रम निम्न प्रकार मनाया जाना चाहिए।

१. श्रावणी-पर्व दिनांक २१ अगस्त २०१३ बुधवार को मनाया जाए। प्रत्येक आर्य परिवार में उस दिन सूर्योदय के समय परिवारिक यज्ञ हो।

२. पारिवारिक यज्ञ से निवृत होकर सब आर्य नर-नारी अपनी संतानो सहित ७-३० बजे आर्य समाज मन्दिर में उपस्थित हो। तत्पश्चात् आर्य पर्व पध्दति के पृ. ११ से ११६ पर्यंत (तृतीय संस्करण संवत् २०४१) लिखित तिथि से सम्मूर्ण पध्दति सम्पन्न कराई जाय। यज्ञ के पश्चात् वैदिक स्वाध्याय के महत्व पर किसी विद्वान का प्रवचन हो।

३. यदि वेद प्रचार का प्रबन्ध न हो सके तो समस्त आर्य नर-नारी यजुर्वेद ४० वे अध्याय का मिलकर अर्थ सहित पाठ करें।

४. उस दिन सब नर-नारी नूतन यज्ञोपवीत धारण करे जिन आर्य बालक-बालिकाओं का उपनयन नहीं हुआ हो तो इस पवित्र-पर्व पर उनका उपनयन संस्कार अवश्य सम्पन्न कराया जाय।

५. प्रत्येक मनुष्य को विधिपूर्वक वेदाध्ययन करना चाहिए। इस दृष्टिकोण से प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है कि वह अपने पड़ोस के अशिक्षित नर-नारियों को यज्ञोपवीत धारण करने की न केवल प्रेरणा दें अपितु आर्य समाज मन्दिर में अधिक-से-अधिक संख्या में उन्हे आमन्त्रित कर यज्ञोपवीत द्वारा उन्हे दीक्षित भी करे।

## सप्ताह के शेष दिनों में

प्रातः समाज मन्दिर में विशेष यज्ञ और वेद पाठ का आयोजन किया जाए।

मध्याह्नः वेद प्रचार निधि में अधिक-से-अधिक धन इकठ्ठा कर शीघ्र सभा कार्यलय को भेज दें।

रात्रि : समाज मन्दिर मे अन्य सार्वजनिक स्थानो में वेद कथाँए हो तथा आर्य समाज के नये सदस्य बनाए जाएँ। शुध्दि, दलितोध्दार, गौ-रक्षा एवं सामाजिक एवं राष्ट्रीय समस्या के सम्बन्ध में चर्चा कर कार्य किया जाए।

## ऋषि भक्तों से विशेष निवेदन

प्राचीन आर्य परम्परानुसार यह वेद के श्रवण-श्रावण का मास है यदि पूरे मास नही तो सप्ताह भर ही क्यों न हो, प्रत्येक आर्य गृहस्थ को प्रतिदिन प्रातः सायं घर मे यज्ञ और वेदों में से चुने हुए कुछ मन्त्रों का अर्थ सहित पाठ करना चाहिए। प्रतिदिन अग्नि रूप भगवान को साक्षी रखकर वेद धर्मानुसार आचरण करने की प्रतिज्ञा करे। साथ ही वैदिक सिध्दान्तों के प्रचार का व्रत लें जिससे अड़ोस-पड़ोस के लोगो में वैदिक वातावरण का निर्माण हो। यह व्रत और दीक्षा का दिन है। इस दीक्षा में सबको विशेष रूप से कटिबध्द होकर इसको उन्नत करने के उचित साधनों का संग्रह करना चाहिए और अपनी सभा को वेद प्रचार के लिए धन की चिन्ता से सदैव मुक्त रखना चाहिए। इसी में सबका कल्याण है। आर्य पुरुषों उठो, जागो और वेद ज्येति को सारे संसार में फैला दो। आर्य जनो संभलो, भामशाह की तरह अपने कर्तव्य को पहचानो और स्वयं तथा अन्यों से धन संग्रह करके शीघ्र सभा के कोष को भर दो। आर्य बन्धुओं मानव जीवन के अपने ऊपर चढे ऋण-बन्धनों को तोड़ने का यह उत्तम अवसर है। जाति की रक्षा का आप पर ऋण है और इस पवित्र दिन सब ऋणों से मुक्त होने का सक्रिय संकल्प कीजिए। आप पर सभा का भी ऋण है और इसे आपको ही उतारना है।

सभा कार्यलय में हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू तथा तेलुगु में आर्य-साहित्य उपलब्ध है। प्रत्येक आर्य को साहित्य खरीदना चाहिए तथा प्रत्येक आर्य समाज के पुस्तकालय में आर्य-साहित्य होना चाहिए। सभा की ओर से तेलुगु हिन्दी संस्कार विधि पंच महायज्ञ विधि छपाई गई है। हर एक आर्य बन्धु इस पुस्तक को अवश्य अपने पास रखे ताकि सभी संस्कार स्वयं करा सकें।

सभा की ओर से आर्य जीवन मासिक का प्रकाशन हो रहा है। आप स्वयं ग्राहक बनकर, औरों को भी ग्राहकबनाये। सभा द्वारा प्रचारार्थ भेजे गये विद्वानों को मार्ग व्यय आदि से सम्मानित करके ही आप विदा करे।

आशा है सदैव की भांति इस सभा के प्रति आपका स्नेह एवं सहयोग सदा बना रहेगा।

**भवदीय**

वेंकट रघुरामुलु मंत्री सभा | विठ्ठलराव आर्य, एम.एससी. एल.एल.बी., प्रधान सभा

**आर्य प्रतिनिधि सभा, आन्ध्र, प्रदेश, महर्षि दयानन्द मार्ग, सुलतान बाजार, हैदराबाद - ५०० ०९५**

www.thearyasamaj.org

ఆహ్వానము

## ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆంధ్రప్రదేశ్

మహర్షి దయానందమార్గము, సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాద

అధ్వర్యంలో

ఆర్యసమాజము ఆర. పీ. రోడ, సికంద్రాబాద్

సౌజన్యంతో

**జంటనగరాల ఆర్య సమాజముల**

## సామూహిక శ్రావణి ఉపాకర్మ పర్వము

**మరియు**

## ఆర్య సత్యాగ్రహ బలిదాన దినము

తేది: 21-8-2013 బుధవారము ఉ॥ 8-30గం॥ల నుండి

ఆర్య ప్రతినిది సభ ఆంధ్రప్రదేశ్ మహర్షి దయానంద మార్గము సుల్తాన్ బజార్ హైద్రాబాద్ అధ్వర్యంలో ఆర్యసమాజము ఆర. పీ. రోడ, సికంద్రాబాద్ **వారి సౌజన్యంతో** జంటనగరాల ఆర్య సమాజాల సామూహిక శ్రావణి ఉపాకర్మ పర్వము మరియు ఆర్య సత్యాగ్రహ బలిదాన దినము (శ్రావణి పూర్ణిమ) తేది 21-8-2013 బుధవారము నాడు నిర్వహించబడును కావున ఆర్య బంధువులందరిని కుటుంబ సమేతంగా సాదరముగా ఆహ్వానిస్తున్నాము. అధిక సంఖ్యలో పాల్గొని కార్యక్రమును

| | |
|---|---|
| యజ్ఞబ్రహ్మ | : గౌ॥ ఆచార్య వసుధాశాస్త్రి గారు, |
| | ఆచార్య అరవింద శాస్త్రిగారు, |
| | : గౌ॥ ప్రియదత్త గారు |
| ముఖ్య అతిధి | : శ్రీ కే. కేశవరావు |
| | సెక్రెటరీ జనరల, టీఆరఎస పార్టీ |
| అధ్యక్షత | : గౌ॥ విఠ్ఠలరావు ఆర్య ప్రధాన్ ఆర్య ప్రతినిధి సభ |
| విధ్వాంసులు | : డా॥ టి.వి. నారాయణ గారు, ఉపప్రధాన్ |
| | : శ్రీ హరికిషన్ వేదా లంకార, మంత్రి |
| | : శ్రీ వెంకట రఘురాములు గారు |
| సంయోజకులు | : శ్రీ లక్ష్మణ్ సింగ్ గారు |
| | ఉప ప్రధాన్ ఆర్య ప్రతినిధి సభ |
| భజన్ | : భజన్ మండలి |
| వందన సమర్పణ | : ఆర్యసమాజము ఆర. పీ. రోడ, సికంద్రాబాద్ |

**భవదీయులు**

| | |
|---|---|
| ప్రధాన్ మంత్రి | ప్రధాన్ మంత్రి |
| ఆర్యసమాజము | ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆంధ్ర ప్రదేశ్ |
| ఆర. పీ. రోడ, సికంద్రాబాద్ | సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాద్ |

**निमंत्रण**

## आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश

के तत्वावधान मे

आर्य समाज आर. पी. रोड, सिकंदराबाद के

सौजन्य से

नगर द्वय की आर्य समाजों का

## सामूहिक श्रावणी उपाकर्म पर्व

## एवं

## आर्य सत्याग्रह बलिदान दिवस

**दिनांक : २१-०८-२०१३ बुधवार**

**प्रात: ८-३० बजे से**

**स्थान : आर्य समाज**

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्रप्रदेश हैदराबाद के तत्वावधान में आर्य समाज आर.पी. रोड, सिकंदराबाद के सौजन्य से नगर द्वय की आर्य समाजों का सामूहिक श्रावणी उपाकर्म पर्व एवं आर्य सत्याग्रह बलिदान दिवस प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी मनाया जा रहा हैं। सभी आर्य बन्धु सपरिवार

| | |
|---|---|
| यज्ञ ब्रहमा | : आचार्या वसुधा शास्त्री जी, |
| | : आचार्य अरविंद शास्त्री जी |
| | : श्री प्रियद्त्त शास्त्री जी |
| मुख्य अतिथि | : मा. श्री के. केशवरावजी, |
| | सेक्रेटरी जनरल, टीआरएस पार्टी |
| अध्यक्षता | : श्री विट्ठलराव आर्य प्रधान सभा |
| भाग लेने वाले विद्वान | : डॉ. टी.वी. नारायण जी, उप प्रधान सभा |
| | : श्री हरिकिशनजी वेदालंकार मंत्री सभा |
| | श्री वेंकट रघुरामूलु जी |
| संयोजक | : श्री लक्ष्मण सिंह जी उप प्रधान सभा |
| भजन | : भजन मंडली |
| धन्यवाद | : आर्यसमाज, आर.पी. रोड, सिकंदराबाद |

भवदीय

| | |
|---|---|
| प्रधान मंत्री | प्रधान मंत्री |
| आर्य समाज | आर्य प्रतिनिधि सभा |
| आर.पी. रोड सिकंदराबाद, | सुल्तान बाजार, हैद्राबाद |

## Hindu Unity

Do Hindus really believe in many gods? Whilst some may hold that the Ramayan, Bhagavad Gita and Shiv Purana are scripture, all these texts declare the Vedas to be supreme and primary authority.

The Conference will reflect on how we practice our rituals and worship such deities as Shiva, Saraswati and Vishnu. Yet there is a common underlying thread that connects all, which the Conference will explore.

For many, the Vedas are abstract and inaccessable but the conference aims to address this perception by showing how relevant and applicable the teachings are in daily life.

ॐ

## Phoenix Programme Open to the Public

- Early morning 1000 Man March against Domestic Violence through the streets of Phoenix.
- Yoga demonstrations & wellness programmes
- Hindu Fair - Displays and sale of spiritual literature from all Hindu Organisations for children, youth and adults
- Communal Havan (Bahukund Havan) for wellbeing and peace where families and other Hindu organisations can book places around many havan kunds
- Evening entertainment by renowned artistes

Don't Delay! You owe it to yourself to nourish your Soul. Register as a delegate NOW at the contacts below.

Visit apssa.co.za for Registration Details
Tel: 031 309 6064 / 031 266 9474

# WORLD VEDIC CONFERENCE 2013

DURBAN, SOUTH AFRICA

*"Bringing wisdom of the Vedas to you"*

Join us for a 4 Day Conference with Experts on Vedic Culture in a rediscovery of ancient and universal wisdom

**When and where**

28 & 29 November 2013; 1 December 2013

30 November 2013

**Times**

09h00 to 16h00
18h00 to 21h30


# तेलुगु में वैदिक भक्तिगीत संग्रह का लोकार्पण

आर्य प्रतिनिधि सभा आंध्र प्रदेश के साधरण सभा के अधिवेशन के पहले दिन पेद्दापल्ली आर्य समाज के बुज़ुर्ग आर्य नेता श्री पसुपर्ती व्यंकटेश्वररावजी तथा आर्य समाज पेद्दापल्ली जिला करीमनगर के प्रमुख साथियों द्वारा तेलुगु में तैयार किये गये वैदिक भक्तिगीत सी.डी. का लोकार्पण भारी जनसमूह के बीच पं. नरेंद्र भवन, राजमोहल्ला हैदराबाद में आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री विठ्ठलराव आर्यजी ने किया। सी.डी. निर्माण में गीतकारों ने बहुतही श्रद्धापूर्वक मेहनत की है। यह सी.डी. सभी आर्य समाजों को श्री वेंकटेश्वररावजी ने निःशुल्क वितरित की। यह सी.डी. हर घर में रखने और सुनने लायक है। अतः हर आर्य परिवार इस सी.डी. को वेंकटेश्वररावजी से संपर्क कर मंगवा लें।

वैदिक भक्तिगीत संग्रह सी.डी.का लोकार्पण करते हुए प्रधान श्रीविठ्ठलरावजी आर्य

अधिवेशन के संदर्भ में यज्ञ करते हुए निवर्तमान मंत्री श्री वेंकट रघुरामुलुजी

www.thearyasamaj.org

RNI.No.52990/93 Reg. No. HD / 783 / 2012-14 12-08-2013 आर्य जीवन

# ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆంధ్రప్రదేశ్, 4 - 2 - 15
మహర్షి దయానంద మార్గము
సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్ - 500 095
ఫోన్: 040 - 24753827, 66758707, ఫ్యాక్స్:24557946
సంపాదకులు - విఠల్‌రావు ఆర్య ప్రధాన్ సభ

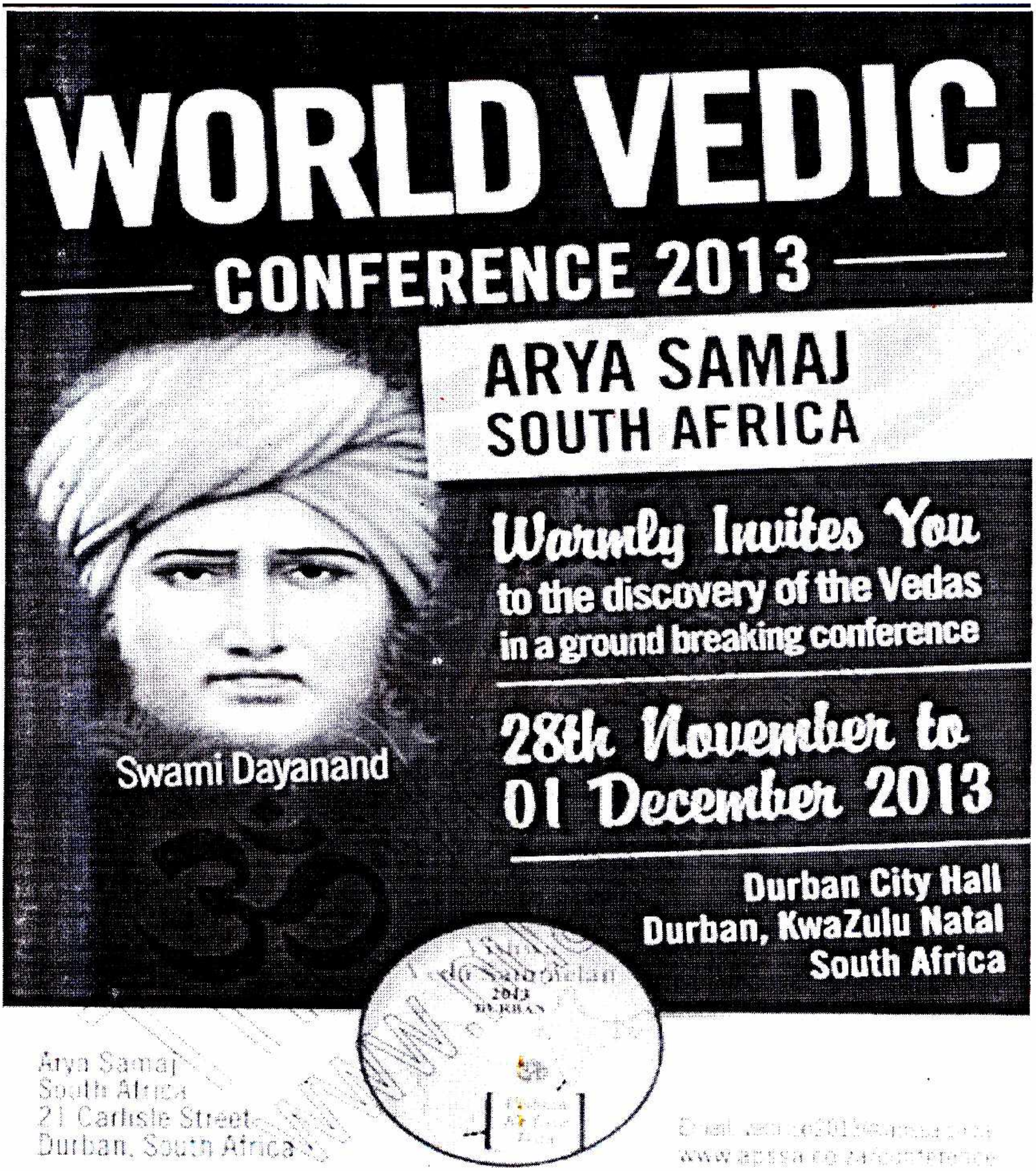




कलांजली प्रेस विठ्ठलवाडी में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया। प्रकाशकः आर्य प्रतिनिधि सभा आं. प्र. सु. बाज़ार, हैदराबाद